9CHLQ7

हिन्दी पाठ-४

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा - ४

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण, भुवनेश्वर

हिन्दी पाठ - ४

मातृभाषा - हिन्दी

कक्षा - ४

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति :

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष

डॉ. स्मरप्रिया मिश्र, प्रभारी

डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र

डॉ. स्नेहलता दास

श्री आशीष कुमार राय

डा: सौदामिनी मिश्र

डा: लक्ष्मीधर दाश

डा: अजित प्रसाद महापात्र

श्री सुरथ बेहेरा

संयोजिका

डॉ. नन्दिता मिश्र

श्रीमती अनुपमा नन्द

डॉ. तिलोत्तमा सेनापति

डॉ. सविता साहु

प्रकाशक

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग, ओड़िशा सरकार

संस्करण - २०१७
२०१९

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
ओड़िशा, भुवनेश्वर

और

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

आइए, ऐसा करें

इस नए पाठ्यक्रम में कई तब्दिलियाँ की गई हैं। पहली है दृष्टिकोण में भिन्नता। अब शिक्षक शिक्षा प्रदान करने की तुलना में विद्यार्थी द्वारा स्वयं सीखने के प्रयास पर जोर दें। भाषण कम करें। विद्यार्थियों को बोलने का मौका दें। उदाहरणार्थ–स्वयं गद्य / पद्य का आदर्श वाचन कर दें, फिर विद्यार्थियों द्वारा उस कार्य को कराएँ। लेखन-शैली बता दें, फिर लिखवाएँ। वाद-विवाद, तर्कसभा, नाटकीय संवाद आदि अधिक, करवाए। लघु निबंध, छोटे-छोटे अनुच्छेद-लेखन, पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी दफ्तरों में प्रचलित पत्रों आदि पर अभ्यास कराए जाएँ।

दूसरी बात है–भाषा-शिक्षण पर अधिक बल देना है। इसलिए हर पाठ के उपरांत लंबी अनुशीलनियाँ दी गई हैं। उनके आधार पर शिक्षक अपनी तरफ से भी नई प्रश्न-शैलियों का प्रयोग कर सकते हैं और विद्यार्थियों द्वारा अभ्यास करवा सकते हैं। फिर साहित्य पर ध्यान दें । इससे बच्चों की रुचि परिमार्जित होती है और मानवीय - वृत्तियों का पोषण-पल्लवन होता है।

तीसरी बात है- मूल्यांकन-शैली में परिवर्तन। विद्यार्थियों के मस्तिष्क से परीक्षा का भय दूर किया जाए। पाठ को रटने की अपेक्षा सृजनात्मक, व्यक्तिगत लेखन अधिक महत्व रखता है। साल में दो-एक परीक्षा के महत्व को कम करके तात्कलिक / सावधिक परीक्षाएँ अधिक संख्या में हों। सबका मूल्यांकन अंतिम परिणाम में प्रतिफलित हो।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठ्यपुस्तक को पहले देख लें, इसके दृष्टिकोण, कर्म, कार्य-शैली का अनुध्यान करके अपनी शिक्षा-शैली बनाएँ। शिक्षक तथा विद्यार्थियों की सक्रियता से भाषा- शिक्षण सरस होता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। इसे सीखना प्रत्येक नागरिक का सांविधानिक कर्तव्य है। यह सारे देश के जन-जन में योगसूत्र स्थापित करने की भाषा है। इसे सीखने में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि आधुनिक माध्यमों का भी उपयोग किया जाए। क्योंकि ये शिक्षण के सरल और सशक्त साधन हैं। यह पाठ्यपुस्तक इन सभी का आधार प्रस्तुत करती है।

शिक्षकों, अभिभावकों के सहयोग और साधनों के उपयोग से हिन्दी भाषा का अध्ययन काफी सरस हो सकता है।

विषय-सूची

क.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	संदेश (कविता)	१
२.	कबीर-रहीम (कविता)	५
३.	घड़ाभर बुद्धि (कहानी)	९
४.	यह जुगनू है (कविता)	१४
५.	शेरे पंजाब (लेख)	१८
६.	साथी हाथ बढ़ाना (कविता)	२३
७.	बचत का महत्व (एकांकी)	२७
८.	प्यार का त्यौहार (निबन्ध)	३३
९.	पहेलियाँ (केवल पढ़ने के लिए)	३८
१०.	वृक्ष लगाओ (कविता)	३९
११.	बस की यात्रा	४३
१२.	माँ कह एक कहानी (कविता)	५०
१३.	पर्यटन (यात्रा वृतान्त)	५५
१४.	खिलौनेवाला (कविता)	६१
१५.	गंगा नदी (केवल पढ़ने के लिए)	६६
१६.	वीर की वसीयत (कविता)	६९
१७.	पत्र लेखन	७३
१८.	जय जवान जय किसान (कविता)	७५

संदेश

9KHDJC

हम बच्चे हैं हम कच्चे हैं
हम हैं अभी नादान
हे दयामय प्रभो करना
तुम सबका कल्याण !
खूब खाएँगे खूब खेलेंगे
खूब पढ़ेंगे हम सब
राह दिखाना आगे बढ़ाना
बड़े बनेंगे हम जब ।
कोई बनेगा अध्यापक तो
कोई बनेगा डॉक्टर
कोई बनेगा वैज्ञानिक और
कोई बनेगा अफसर ।

कोई यंत्री कोई मंत्री
सांसद विधायक
ऐसी बुद्धि देना प्रभु तुम
बनें हम सच्चे सेवक ।

बड़े बनेंगे बहुत करेंगे
बड़े बड़े हम काम
देश-देश में ऊँचा करेंगे
हम भारत का नाम ।

नहीं लड़ेंगे दोस्ती करेंगे
देश हो या परदेश
हम शांति का भाईचारे का
सबको देंगे संदेश ।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

नादान - नासमझ

कल्याण - मंगल

दयामय-भगवान

परदेश - विदेश

संदेश - सूचना, वार्ता

दोस्ती - मित्रता

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) बच्चे बड़े होकर क्या-क्या बनने का सपना देखते हैं ?

ख) बच्चों की क्या अभिलाषा है ?

ग) बच्चे ईश्वर से क्या माँगते हैं ?

२. नीचे लिखी पंक्तियों के अर्थ लिखो-

क) बड़े बनेंगे बहुत करेंगे

बड़े बड़े हम काम

देश देश में ऊँचा करेंगे

हम भारत का नाम ।

ख) नहीं लड़ेंगे दोस्ती करेंगे

देश हो या परदेश

प्रेम शांति का भाईचारे का

सबको देंगे संदेश ।

३. नीचे दिए गए शब्दों के प्रयोग से एक-एक वाक्य बनाओ-

अध्यापक, बुद्धि, सेवक, देश ।

४. रेखा खींचकर निम्न शब्दों को जोड़ो-

क) अध्यापक	क) मरीज की सेवा करता है ।
ख) डॉक्टर	ख) शिक्षादान करता है ।
ग) वैज्ञानिक	ग) शासन व्यवस्था की देख-रेख करता है ।
घ) अफसर	घ) नए नए आविष्कार करता है ।

५. कविता से आगे -

क) यदि तुम्हें ईश्वर मिल जाते तो तुम उन्हें क्या क्या माँगते ?

ख) तुम बड़े होकर क्या बनना पसन्द करोगे और देश की सेवा कैसे करोगे ?

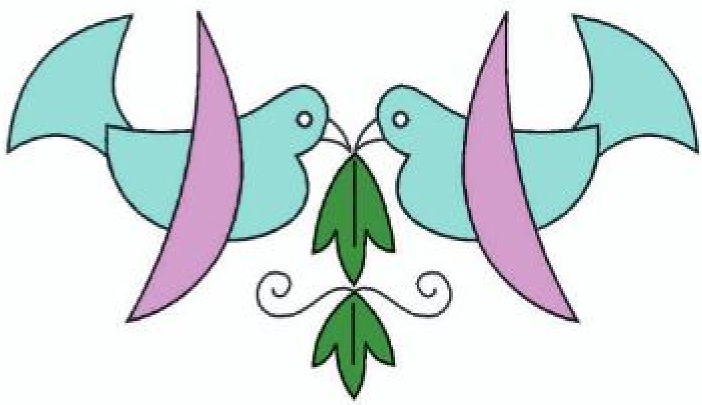

कबीर-रहीम

कबीर -

दु:ख में सुमिरन सब करै, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दु:ख काहे को होय।।
बोली एक अमोल है, जो कोई बोले जानि ।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि ।।
जहाँ दया है तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप ।।
कथनी मीठी खाण्ड सी, करनी विष की लोय ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय ।।
माखी गुड़ में गाड़ि रहे, पंख रह्यो लिपटाय ।
हाथ मलै और सिर धुनै, लालच बुरी बलाय ।।

रहीम -

टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार ।
रहिमन फिर फिर पोइये, टूटे मुक्ता हार ।।
दोनों रहिमन एक से जौं लौ बोलत नहिं ।
जान परत है काक पिक, ऋतु वसन्त के माहिं ।।
रहिमन धागा प्रेम का मत तोरहुँ चटकाय ।
टूटे से फिर ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय ।।
समय पाय फल होत है समय पाय परि जात ।
सदा रहै नहीं एक सी का रहीम पछतात ।।
तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पान ।
कहि रहीम परकाज हित, संपत्ति संचहि सुजान ।।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

हिय - हृदय	तहँ - वहाँ	छिमा - क्षमा
लोय - गोला	जुरै - जुड़ता है	सुजन - अच्छे लोग
पोइए - पिरोइए	तरुवर - पेड़	चटकाय - झटके में तोड़ना

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) किसी भी बात को मुख से बाहर कब लाना चाहिए ?

ख) धर्म कहाँ बसता है ?

ग) पाप किसके साथ रहता है ?

घ) अत्यधिक क्रोध से क्या होता है ?

ङ) ईश्वर कहाँ बसते हैं ?

च) कवि कथनी को छोड़ करनी पर क्यों बल देते हैं ?

छ) काक और पिक की तुलना रहीम ने किस किस से की है और क्यों ?

ज) अच्छे लोग संपत्ति का संचय क्यों करते हैं ?

२. नीचे लिखी पंक्तियों के अर्थ लिखो-

क) दु:ख में सुमिरन सब करै.......दु:ख काहे को होय ।।

ख) माखी गुड़ में गाड़ि रही .... लालच बुरी बलाय ।।

ग) टूटे सुजन मनाइये .... टूटे मुक्ता हार ।।

घ) समय पाय फल .... का रहीम पछतात ।।

३. प्रत्येक वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखो-

क) जिसका अंत नहीं है ....

ख) जिसे मूल्य में न आँका जा सके.........

ग) बुरा व्यक्ति...........

घ) अच्छा व्यक्ति.........

४. निम्नलिखित का गद्य रूप लिखो-

हिय, पोइए, छिमा, सुजन, जुरै ।

५. कविता से आगे-

कबीर और रहीम की तरह तुम किसी अन्य कवि के दोहों को याद करके कक्षा में सुनाओ और उनके अर्थ शिक्षक से पूछो ।

घड़ाभर बुद्धि

9LF5MM

एक बार बादशाह अकबर के दरबार में पड़ोसी राज्य से एक व्यक्ति आया । उसने अकबर से निवेदन किया कि पड़ोसी राज्य के राजा ने उनसे घड़ाभर बुद्धि भेजने को कहा है।

बादशाह ने उसके ठहरने की उचित व्यवस्था करवाई और उसे कुछ दिन रहकर राज्य के दर्शनीय स्थान देखने को कहा । इतने में घड़ाभर बुद्धि का प्रबंध हो जाएगा । पर अकबर चिंतित थे । बीरबल बीमार थे और नवरत्नों में से कोई इस समस्या का हल न निकाल सकता था । बीरबल होते तो कुछ किया जा सकता था ।

अकबर रातभर सोचते रहे,पर वे स्वयं भी कोई हल न सोच सके ! सुबह होते ही वे बीरबल के यहाँ पहुँचे । बीरबल का हाल पूछा । फिर अपनी समस्या उनके सामने रखी ।

सुनते ही बीरबल ज़ोर से हँसे । बोले- अच्छा ! तो अब चींटी के भी पर निकले हैं । आप व्यर्थ की चिंता छोड़िए और मुझे मिट्टी के दो-चार घड़े भिजवा दीजिए । हाँ, उस दूत को दो महीने तक यहीं ठहरना होगा । बुद्धि का घड़ा भर जाने पर भिजवा दिया जाएगा ।

पड़ोसी राज्य के दूत का खूब आदर-सत्कार किया गया । उसे पूरे राज्य के दर्शनीय स्थान दिखाए गए । अकबर अधीर थे कि कुछ हो भी रहा है या नहीं । पूछने पर बीरबल मुस्करा देते और कहते- बादशाह सलामत, धैर्य रखें । बुद्धि का घड़ा धीरे-धीरे भर रहा है ।

आखिर वह दिन भी आ पहुँचा जिसका पूरा दरबार बेचैनी से इंतज़ार कर रहा था । बीरबल एक सेवक के सिर पर घड़ा उठवाए दरबार में उपस्थित हुए । पड़ोसी राज्य के दूत से कहा गया- यह घड़ाभर बुद्धि है पर आप बिना घड़ा तोड़े, बिना काटे, इसे घड़े से निकाल लें ।

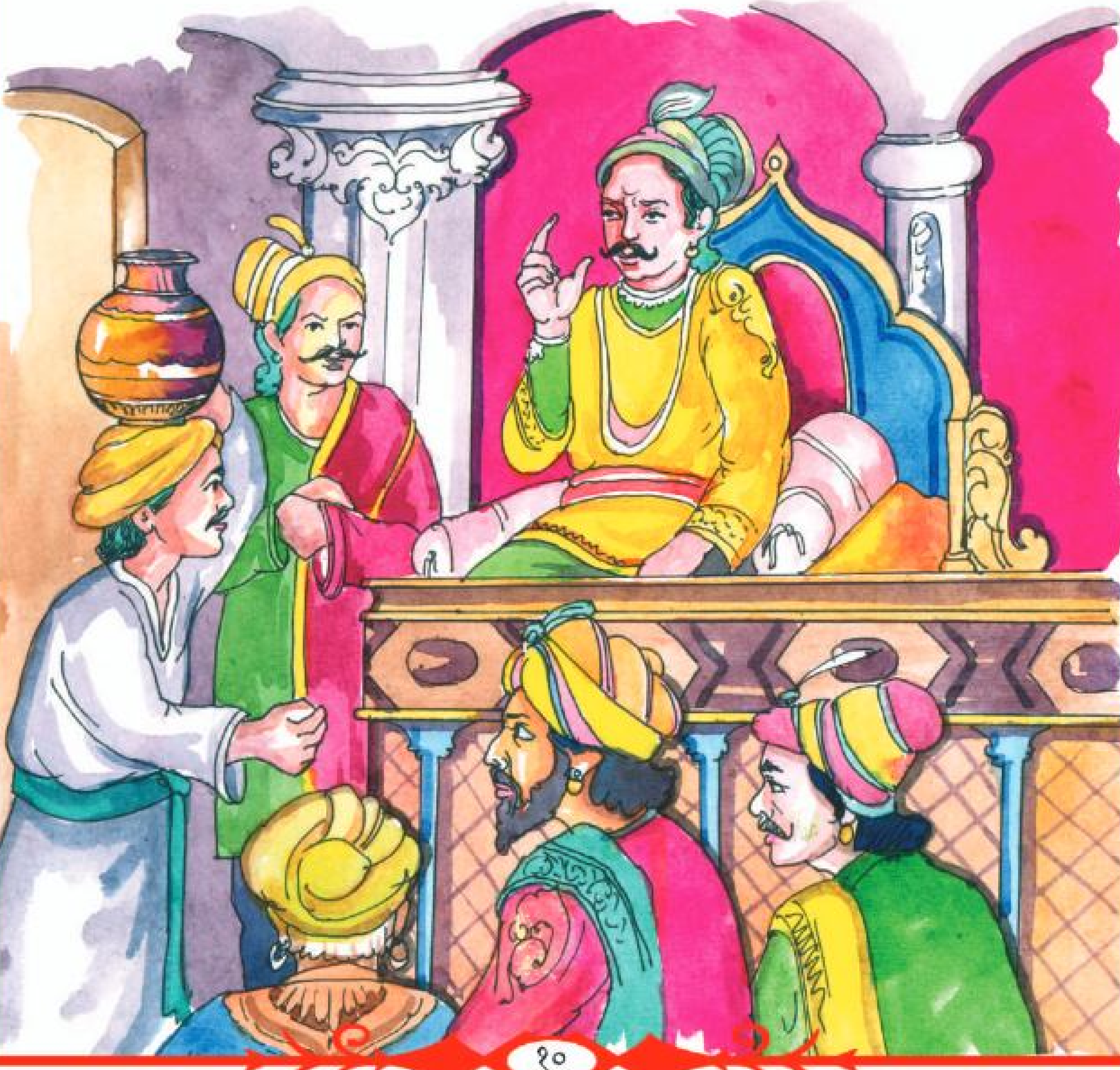

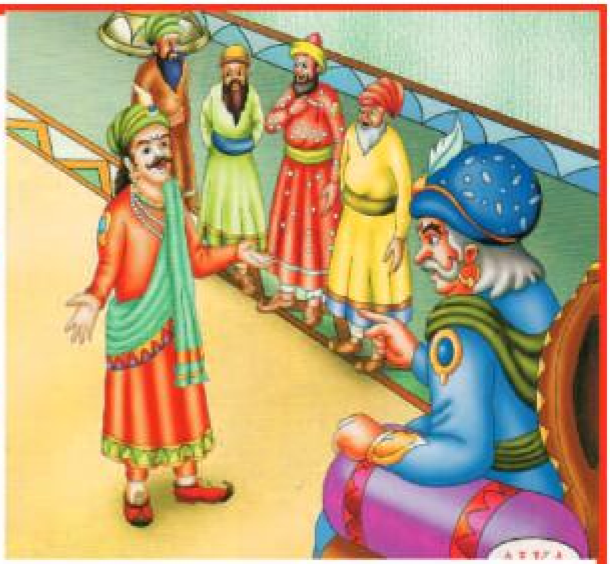

दरबार में प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्य से घड़े को देख रहा था पर किसी की समझ में कुछ न आया । अकबर भी हैरान थे । उन्होंने बीरबल से सब-कुछ समझाने को कहा ।

बीरबल बोले- महाराज! यह बुद्धि का ही चमत्कार है ।

अकबर ने प्रश्न किया- कैसे ?

बीरबल बोले- महाराज, मैंने इसमें बेल से लगा छोटा-सा कुम्हड़ा डाल दिया । बेल से भोजन और जल पाकर धीरे-धीरे कुम्हड़ा इतना बड़ा हो गया कि घड़ा भर गया । बस! अब उन्हें निकालकर ले लेने दीजिए- घड़ाभर बुद्धि । सारा दरबार दंग रह गया ।

बीरबल अकबर के दरबार के नवरत्नों में सबसे चमकते रत्न थे । उनकी बुद्धि और हाज़िरजवाबी के किस्से आज भी खूब शौक से सुने और सुनाए जाते हैं ।

- संकलित

इन शब्दों के अर्थ जानो-

निवेदन - प्रार्थना	सत्कार - आदर
व्यवस्था - इंतजाम	धैर्य - धीरज
समस्या - कठिनाई	चमत्कार - अनहोनी बात

१. पढ़ो और सोचो-

क) पड़ोसी राज्य से दूत क्यों आया था ?

ख) अकबर क्यों चिंतित थे ?

ग) दूत को कितने दिनों तक राज्य में ठहराने के लिए बीरबल ने अकबर से कहा ?

घ) पड़ोसी राज्य के दूत से घड़ाभर बुद्धि किस तरह ले जाने को कहा गया ?

ङ) बीरबल ने मिट्टी का घड़ा क्यों मँगवाया ?

२. सोचकर लिखो-

क) अकबर के राज्य में दूत के साथ कैसा व्यवहार किया गया ?

ख) बीरबल ने बुद्धि का चमत्कार कैसे दिखाया ?

ग) क्या घड़े में सचमुच बुद्धि भरी थी ? यदि ना तो क्यों ?

घ) अकबर को बीरबल पर बहुत ज्यादा भरोसा क्यों था ?

३. पढ़ो और समझो-

बुद्धि, सिद्धि, शुद्धि	द्+ध= द्ध
राज्य, त्याज्य, पूज्य	ज्+य= ज्य
कुम्हड़ा, तुम्हारा, कुम्हार	म्+ह= म्ह
समस्या, तपस्या, आलस्य	स्+य= स्य

४. **निम्नलिखित शब्दो के विलोम रूप लिखो-**

राजा, चिंतित, आदर, अधीर

५. **किसी व्यक्ति, जाति, वस्तु, समूह ओर भाव के नाम प्रकट करनेवाले शदों को संज्ञा कहते हैं। जैसे-** राम, पुरुष, घर, परिवार, ममता आदि ।

पाठ से संज्ञा पदों को छाँटकर लिखिए ।

६. **पाठ से आगे-**

कुम्हड़े का एक सुन्दर -सा चित्र बनाकर उसमें रंग भरो ।

पाँच और सब्जियों के नाम लिखो ।

१	२	३	४	५

इस तरह बीरबल के कई किस्से हैं। पुस्तकालय से पुस्तक लेकर उन्हें पढ़ो।

यह जुगनू है

झिलमिल करता यह जुगनू
कुछ कहता है, क्या कहता है ?
अंधकार में आगे चलूँ मैं
संसार तो पीछे आता है ।

9LP1PA

बोली इसकी कोई न समझे
पर मैं ठीक समझता हूँ
बड़ी डींग हाँकता यह तो
कब्जे में इसको करता हूँ ।

देखो देखो आया मुट्ठी में
खत्म हुई अब सारी चकमक
पाँच उँगलियों के पिंजरे में
बुझ गई इसकी सारी रौनक ।

मुट्ठी भर अंधेरे को तो
दूर नहीं भगा सकता
कहता था दुनिया भर के
तमस को है यह मिटाता ।

अहह ! मेरी उँगलियों में
कौंध रही यह किसकी झलक
लाल गुलाबी रंग निराली
अहा उँगलियों की यह ठसक ।

मान गया हे जुगनू भैया
करतब बड़ा तू करता है,
अंधकार को दूर हटाता
काले को उजाला करता है ।

तुझ सा मैं हूँ छोटा
पर काम बड़ा सा कर लूँगा
दुनिया से डरूँगा नहीं कदापि
आलोक पथ अपना बनाऊँगा ।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

संसार - जग	डींग हाँकना - बढ़चढ़कर बातें करना
रौनक - चमक	तमस - अंधेरा

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) झिलमिल कर जुगनू क्या कहता है ?

ख) बच्चा जुगनू को कब्जे में कैसे कर लेता है ?

ग) बच्चे की मुट्ठी में जुगनू की कैसी छवि झलकती है ?

घ) बच्चे ने जुगनू से क्यों हार मान ली ?

ङ) बच्चा जुगनू से क्या सीख लेता है ?

२. नीचे लिखी पंक्तियों के अर्थ लिखो-

क) मुट्ठी भर अंधेरे.........

.... तमस को है यह मिटाता ।

ख) तुझ सा मैं हूँ छोटा.........

.... अपना बनाऊँगा ।

३. श्रुतलेख (सही पढ़ो ओर सही लिखो)

जुगनू, मुट्ठी, पिंजरा, डींग, उँगली, कब्जा

४. **निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो-**

अंधकार, संसार, भैया, पथ

५. **कविता से आगे-**

क्या तुम्हारा भी जुगनू की तरह आसमान में उड़ने का मन करता है । जरा आँख बंद करके सोचो तो तुम्हें आसमान में क्या-क्या चीजें दिखाई देती हैं ?

शेरे पंजाब

9LXHQX

कोई घर से किसी काम से निकले और वापस न आए तो कैसा लगेगा ? 1913 में लाला लजपत राय इंग्लैण्ड गए, वहाँ की सरकार को भारतीयों की दुर्दशा की कथा सुनाने । लेकिन अंग्रेज सरकार ने उन्हें न तो वहाँ रहने दिया न भारत लौटने दिया । लालाजी को अमेरिका में सात साल गुजारने पड़े । कैसा अन्याय था ?

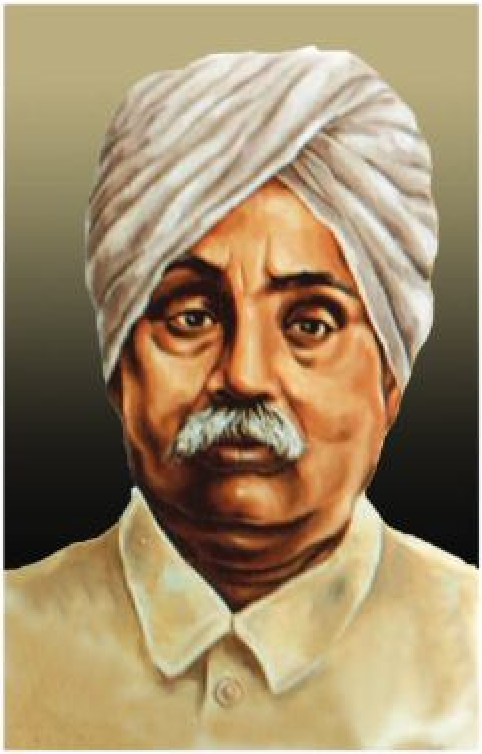

ऐसे एक बार नहीं, उनके साथ बारबार हुआ । 1907 में ही उन्होंने पंजाब के किसानों के लिए नहरों में पानी मुहैया कराने का दावा पेश किया । सारा पंजाब हिल उठा । सारे किसान सरकार के सामने अपनी माँग पेश करने लगे । भारत में जो अंग्रेज सरकार शासन कर रही थी, उसकी नींद हराम हो गई । लजपत राय को निर्वासन दंड मिला । वे वर्मा में कई साल रहे। भारत नहीं आ सके ।

जब आए, तो फिर पंजाब के जवानों को इकट्ठा करके आजादी की लड़ाई में भाग लिया । कांग्रेस की सभा-समितियों में हिस्सा लिया । 1920 में गांधीजी के साथ असहयोग आन्दोलन चलाया । अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए । उसी वर्ष वे कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन

के सभापति हुए । 1921 में ही फिर उन्हें कैद कर लिया गया , क्योंकि वे प्रिंस अफ वेल्स के भव्य स्वागत-समारोह का विरोध कर रहे थे । भारत गरीब देश है, फालतू का खर्च नहीं कर सकता । लाला की बात सही थी । लेकिन अंग्रेज सही को गलत करार देते थे ।

लालाजी के पिता शिक्षाप्रेमी थे । उन्होंने लजपत को ऊँची शिक्षा दी । लाला एल.एल.बी पास हुए । थे वे बड़े स्वाभिमानी । फिर स्वामी दयानन्द के साथ मिलकर समाज सुधार का काम किया । उनके चरित्र की दृढ़ता काफी बढ़ गई। मानो वे शेर बन गए। इसलिए उनको शेर- ए- पंजाब कहा गया ।

जीओ तो शेर की भाँति,मरो भी तो शेर की भाँति । 1928 में साईमन कमीशन का विरोध करते हुए लाहौर में वे एक जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे । उम्र काफी थी । पर क्रांति के लिए हरदम तैयार ! वे चिल्ला रहे थे– साईमन कमीशन वापिस जाओ ! वहाँ के पुलिस अफसर

को गुस्सा आ गया । उसने जुलूस पर लाठी चलाने का हुक्म दे दिया । लाला जी की छाती और सिर पर लाठियाँ बरसीं । बड़ी-बड़ी चोटें आईं। उसी प्रहार के कुछ दिन बाद 'शेरे पंजाब' संसार छोड़ कर चले गए ।

भारत के अनेक स्वतंत्रता सेनानी ऐसे कष्ट उठाते रहते थे । पर लाला पर अंग्रेजों ने बेहद अत्याचार किया ।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

निर्वासन - देश निकाला	हिस्सा लेना - भाग लेना
अधिवेशन - बैठक	नेतृत्व - दल को आगे ले चलना, अगुवाई

१. पढ़ो और सोचो-

क) लाला लजपत राय कौन थे ?

ख) लाला इंग्लैण्ड़ क्यों गए थे ?

ग) 1907 में लाला ने क्या दावा पेश किया ?

घ) 1920 में लाला ने गांधीजी के साथ मिलकर किस आन्दोलन में भाग लिया ?

२. सोचकर लिखो-

क) लाला लजपत राय को शेरे पंजाब क्यों कहा जाता था ?

ख) देश को आजादी दिलाने के लिए लाला ने कैसी लड़ाई लड़ी ?

ग) साईमन कमीशन का विरोध लाला ने किस प्रकार किया ?

घ) लाला की देशभक्ति का परिचय दो ।

३. नाम के बदले आनेवाले शब्द - सर्वनाम

पाठ से ऐसे शब्द चुनो जो सबके नामों की जगह आए हों। जैसे- मैं, वह, उसने , उनसे आदि ।

४. और, पर, कि, क्योंकि आदि शब्द दो वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं । इन शब्दों को समुच्चय बोधक कहा जाता है ।

जैसे- सीता मेरे घर आई पर मैं नहीं मिली ।

मोहन मेरे घर आया था क्योंकि उसे मुझसे किताब लेनी थी ।

इसी तरह उपरोक्त शब्दों के प्रयोग से दो-दो वाक्य और बनाओ ।

५. **नीचे लिखे वाक्यों को भविष्यत् काल में बदलो ।**

क) उन्होंने अपना संघर्ष अंतिम दिनों तक जारी रखा ।

ख) पुलिस ने लाठी चलाई ।

ग) वे यहाँ से चले गए ।

घ) लाला जी ने जनता को संगठित किया ।

६. **पाठ से आगे-**

देश को अंग्रेज शासकों से मुक्त करवाने के लिए बहुत सारे देशप्रेमियों ने अपनी जान की बाजी लगा दी । तुमने उनमें से किसी की कथा पढ़ी है, क्या ? जिसके व्यक्तित्व ने तुम्हें सबसे ज्यादा आकर्षित किया है उस पर एक लेख लिखो ।

कुछ स्वतन्त्रता सेनानिओं के चित्र ढूँढकर यहाँ लगाओ ।

साथी हाथ बढ़ाना

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना ।
साथी हाथ बढ़ाना ।
हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रस्ता छोड़ा, परबत ने सीस झुकाया
फौलादी हैं सीने अपने, फौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें
साथी हाथ बढ़ाना ।

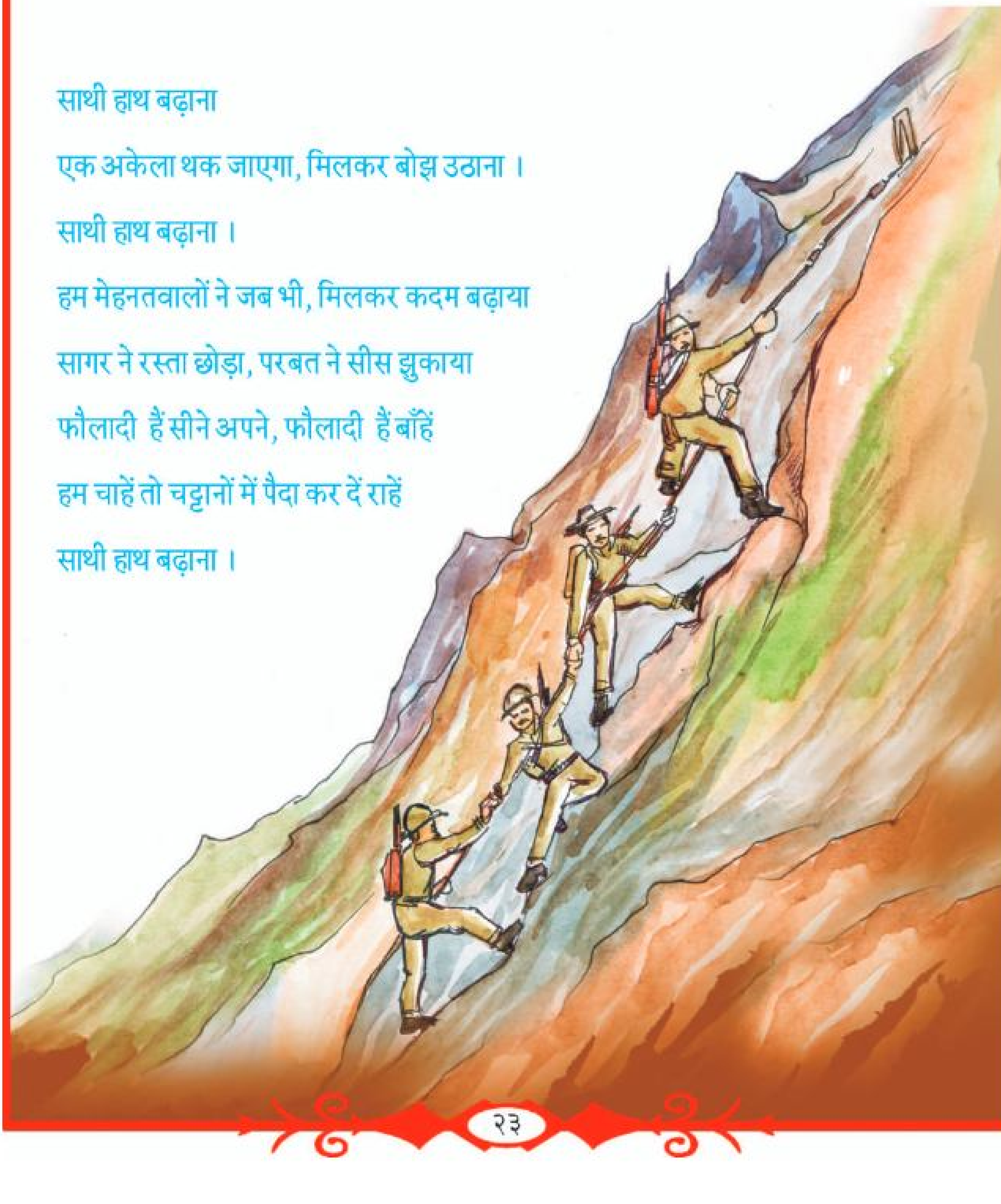

मेहनत अपने लेख की रेखा, मेहनत से क्या डरना
कल गैरों की खातिर की, आज अपनी खातिर करना
अपना दुख भी एक है साथी, अपना सुख भी एक
अपनी मंज़िल सच की मंज़िल, अपना रस्ता नेक
साथी हाथ बढ़ाना ।

एक से एक मिले तो कतरा, बन जाता है दरिया
एक से एक मिले तो ज़र्रा, बन जाता है सेहरा
एक से एक मिले तो राई, बन सकती है परबत
एक से एक मिले तो इंसाँ, बस में कर ले किस्मत
साथी हाथ बढ़ाना ।

- साहिर लुधियानवी

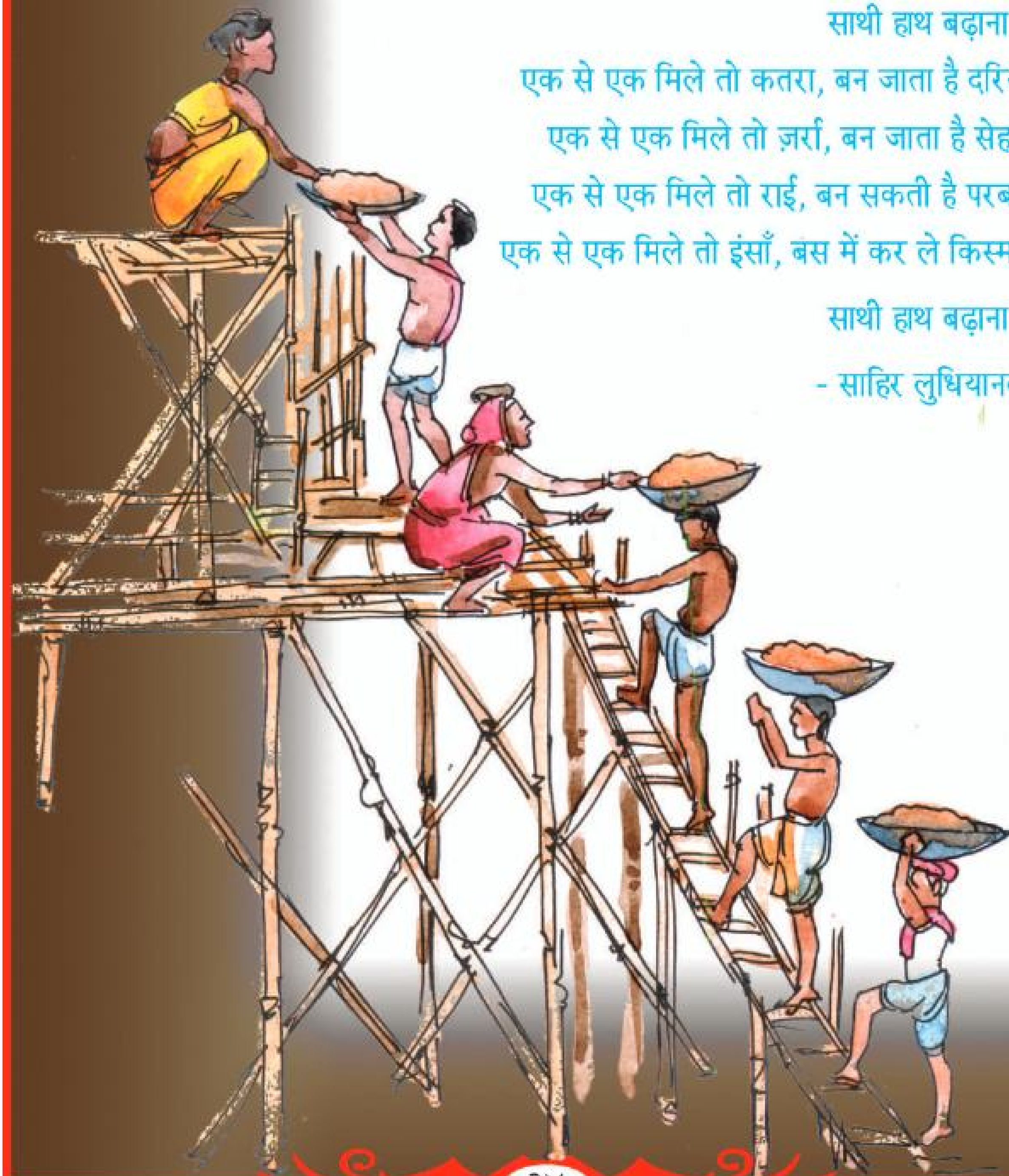

इन शब्दो के अर्थ जानो-

मेहनत - परिश्रम	पर्वत - पहाड़	फैलादी - दृढ़
मंजिल - लक्ष्य	नेक - अच्छा	गैर - अन्य
कतरा - बूंद	दरिया - नदी	राई - सरसो, छोटी चीज
ज़र्रा - रेत का कण	किस्मत - भाग्य	इंसाँ - मनुष्य

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) साथी शब्द का प्रयोग किस के लिए हुआ है ?

ख) मिलकर काम करने से हमें क्या फायदा होगा ?

ग) अकेला आदमी सारा काम क्यों नहीं कर सकता ?

घ) अपना सुख-दु:ख एक है- ऐसा कवि ने क्यों कहा है ?

२. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो-

दु:ख, अच्छा, छोड़ना, अपना

३. साथी हाथ बढ़ाना

एक अकेला थक जाएगा , मिलकर बोझ उठाना ।

- इस वाक्य में से क्रिया पद छाँटकर लिखो ।

४. कविता से आगे-

क) तुम्हारे घर में कौन-कौन क्या क्या काम करते हैं-

१. खाना पकाना.............

२. सफाई करना............

३. पढ़ाना....................

४. पढ़ना.....................

५. पैसे कमाना..............

ख) तुम अपना साथी किसे मानते हो ? उसे साथ लेकर तुम क्या-क्या कर सकते हो ? दस वाक्यों में लिखो ।

बचत का महत्त्व

(स्कूल के छात्रालय के कमरे में विनोद उदास बैठा है । हिसाब की नोटबुक उसके सामने खुली पड़ी है । उसका मित्र अशोक उससे मिलने आता है ।)

अशोक : क्या बात है विनोद, आज तुम उदास दिखाई दे रहे हो !

विनोद: क्या बताऊँ भाई, कुछ दिन से जेब बिलकुल खाली है ।

अशोक : लेकिन अभी-अभी तो तुम्हारे पिताजी का मनीआर्डर आया था ?

विनोद: अशोक, पैसा मेरे पास टिकता ही नहीं । इधर आया और उधर गया ।

अशोक : आज तो २० तारीख़ हुई है । अभी तो महीने में पूरे दस दिन बाक़ी हैं । अब क्या करोगे तुम ?

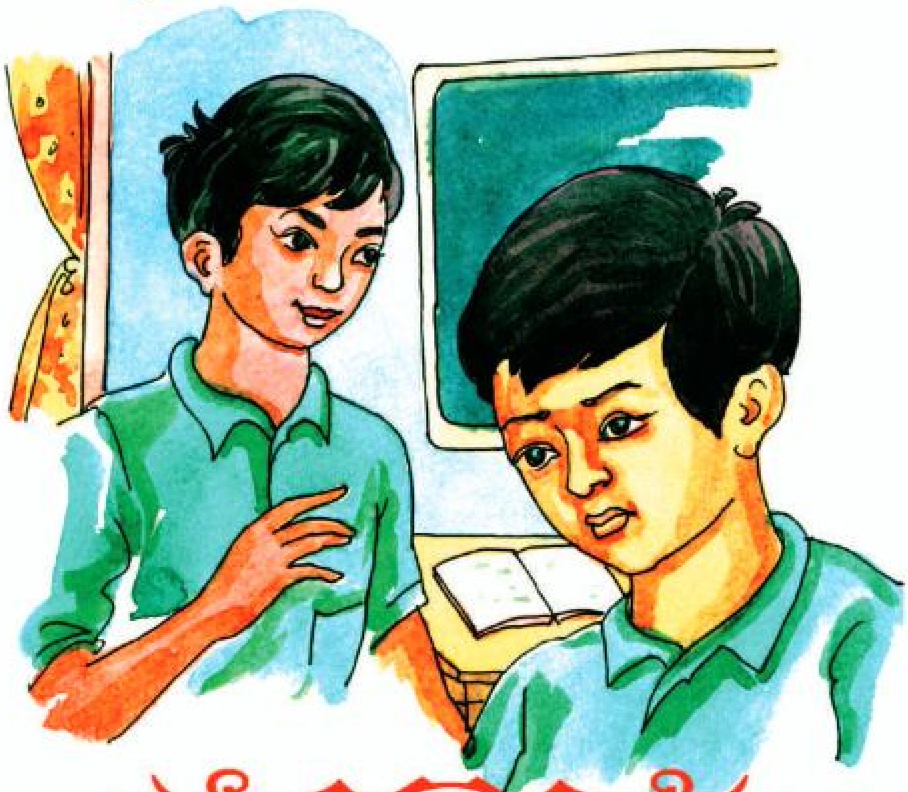

विनोद: करना क्या है ? किसी से माँग लूँगा या उधार ले लूँगा, फिर अगले महीने लौटा दूँगा ।

अशोक : देखो विनोद, तुम मेरे मित्र हो, इसलिए कहता हूँ । रोज़-रोज़ उधार लेने की आदत अच्छी नहीं है ।

विनोद: भाई, उधार लेना तो मुझे भी अच्छा नहीं लगता, पर क्या किया जाए ?

अशोक : सुनो, सबसे पहले तो तुम अपनी फिज़ूलख़र्ची की आदत छोड़ दो । मैं यह नहीं कहता कि तुम पैसे को दाँत से पकड़ो । मैं तो सिर्फ़ इतना ही चाहता हूँ कि तुम फालतू ख़र्च बंद कर दो और हर महीने जो हाथख़र्च तुम्हें मिले, उसमें से थोड़ा बहुत अवश्य बचाओ ।

विनोद: बचाने से फ़ायदा ?

अशोक : मुझे तुम्हारे प्रश्न पर हँसी आती है । न केवल आदमी, बल्कि मक्खियाँ, कीड़े - मकोड़े और जानवर तक आड़े समय के लिए बचाते हैं । कुत्ते के पास ज्यादा रोटियाँ आ जाती हैं तो वह उन्हें छुपाकर रख देता है और जब भूख लगती है तब निकालकर खाता है । कीड़े-मकोड़े भी खराब मौसम के लिए खुराक इकट्ठी करते हैं । ऊँट लम्बे सफर में जाने से पहले इतना पानी पी लेता है कि पन्द्रह-बीस दिन तक पानी न मिले तो भी उसका काम चल सकता है । जब जानवरों में इतनी समझ है, तब हम तो इन्सान हैं!

विनोद: बात तो तुमने ठीक कही । अब यह बताओ कि कैसे बचाए जाएँ पैसे ?

अशोक: सीधी-सी बात है । पैसा हाथ में रहता है तो ख़र्च हो जाता है । इस बार जैसे ही मनीआर्डर आए, डाकखाने में जाकर तुम बचत का खाता खोल लो । न पैसे हाथ में होंगे, न ख़र्च होंगे ।

विनोद: अच्छी बात है, इस बार पैसा मिलने पर ऐसा ही करूँगा ।

अशोक: एक बात और सुनो, विनोद ! यदि इस तरह हम सब थोड़ा-थोड़ा बचाकर स्कूल में एक सहकारी समिति बना सकें तो बड़ा अच्छा होगा ।

विनोद: सहकारी समिति से क्या होगा ?

अशोक: हर विद्यार्थी इसमें कुछ-न- कुछ रकम लगाएगा । इस तरह इकट्ठी हुई रकम से हम सहकारी भंडार चलाएँगे, जिसमें विद्यार्थियों के उपयोग की वस्तुएँ रहेंगी । बिक्री

से जो लाभ होगा, उसे हम राष्ट्रीय बचत-योजना में लगाएँगे । हमारे देश को विकास-योजनाओं के लिए सबसे बड़ी ज़रूरत है धन की ।

विनोद: हमारे मुट्ठीभर पैसों से देश की क्या मदद हो सकती है ?

अशोक: विनोद, तुम यह क्यों भूल जाते हो कि बूँद-बूँद करके ही घड़ा भरता है । हमारी तरह धीरे-धीरे यदि सब लोग यह बचाने लगें, तो बड़ी रकम इकट्ठी होगी । उससे देश के बड़े -बड़े काम हो सकेंगे ।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

फिज़ूलख़र्ची - अपव्यय

आड़े समय - विपत्ति के समय

मुट्ठीभर - बहुत कम

वाकई - वास्तव में

पैसा दाँत से पकड़ना - कंजूसी करना

रकम - रुपये पैसे

१. पढ़ो और सोचो-

क) विनोद उदास क्यों था ?

ख) विनोद के पास पैसे टिकते क्यों नहीं थे ?

ग) विनोद को पैसे उधार न लेने के लिए किसने समझाया ?

घ) राष्ट्रीय बचत योजना के पैसे किस काम में आते हैं ?

२. सोचकर लिखो-

क) पैसे किन किन उपायों से बचाए जा सकते थे ?

ख) फिज़ूलख़र्ची से बचने के लिए अशोक ने विनोद को क्या सलाह दी ?

ग) सहकारी समिति से बच्चों का क्या लाभ होगा ?

घ) विनोद ने सहकारी योजना में नाम लिखवाने को क्यों तैयार हो गया ?

३. अर्थ जानकर रिक्त स्थान भरो-

ओर - तरफ़	शोक - दु:ख
और - तथा , अधिक	शौक - रुचि
दिन - दिवस	कर - करना क्रिया पद
दीन - गरीब	कर - हाथ

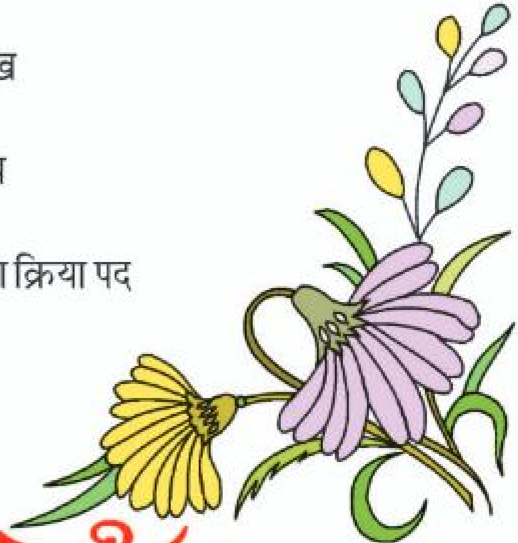

क) विनोद मेरे घर की .... आ रहा था । (और/ओर)

विनोद ....अशोक साथ-साथ स्कूल गए ।

ख) लता को चित्र बनाने का ....है । (शोक/शौक)

बापुजी की मृत्यु पर पूरे देश ने ....मनाया ।

ग) अशोक ....के छ : बजे पढ़ने बैठता है । (दिन/दीन)

ईश्वर .... जनों की रक्षा करते हैं ।

घ) मोहन रोज एक घंटा काम .... के विद्यालय जाता है । (कर/कर)

मैंने अपने .... से ईश्वर को फूल चढ़ाया ।

४. निम्न शब्दों के प्रयोग से एक एक वाक्य बनाओ-

उपयोग, मौसम, आश्चर्य, ख़र्च ।

५. पाठ से आगे-

- अपने खर्च का हिसाब रखो और बचत की आदत डालो ।

- बचत के महत्व पर एक लेख लिखकर कक्षा में सबको सुनाओ ।

- पैसों की तरह आप और क्या क्या बचा सकते हैं ?

प्यार का त्यौहार

भाई और बहन का प्यार निराला होता है । बहन अपने लिए कुछ नहीं चाहती, भाई की भलाई चाहती है, उसकी मंगलकामना करती है । भाई भरसक बहन की मदद करता है, उसे खतरे से बचाता है । भारत में रक्षाबंधन का त्योहार तो मशहूर ही है । बहन भाई के हाथ में राखी बाँधती है, उसे मिठाई खिलाती है । भाई बहन के हर काम में साथ देता है । भाई बहन का रिश्ता ममेरे मौसेरे भाई तक फैला है। मेवाड़ की रानी कर्मवती

का मुगल बादशाह हुमायूँ के लिए राखी भेजना, हुमायूँ का मेवाड़ जाना- भाई बहन के पवित्र सबंध का साक्षी है ।

ओड़िशा में भी भाई बहनों में स्नेह है। भादों और आश्विन के महीने में बहनें भाइयों के लिए व्रत रखती हैं । इस संबंध में एक कथा प्रचलित है ।

बहुत दिनों की बात है । तब ओड़िशा के व्यापारी बोहितों में जावा, सुमात्रा, वर्मा इन्दोनेशिया आदि देशों में व्यापार के लिए जाते थे । उसमें उनको काफी लाभ मिलता था । लोग खुशहाल थे । एक बनिया का परिवार था जिसमें सात भाई थे और एक बहन । बहन थी सबसे छोटी । इसलिए बहन बड़े लाड़-प्यार से बड़ी हो रही थी । प्यारा-सा उसका नाम था- तअपोई !

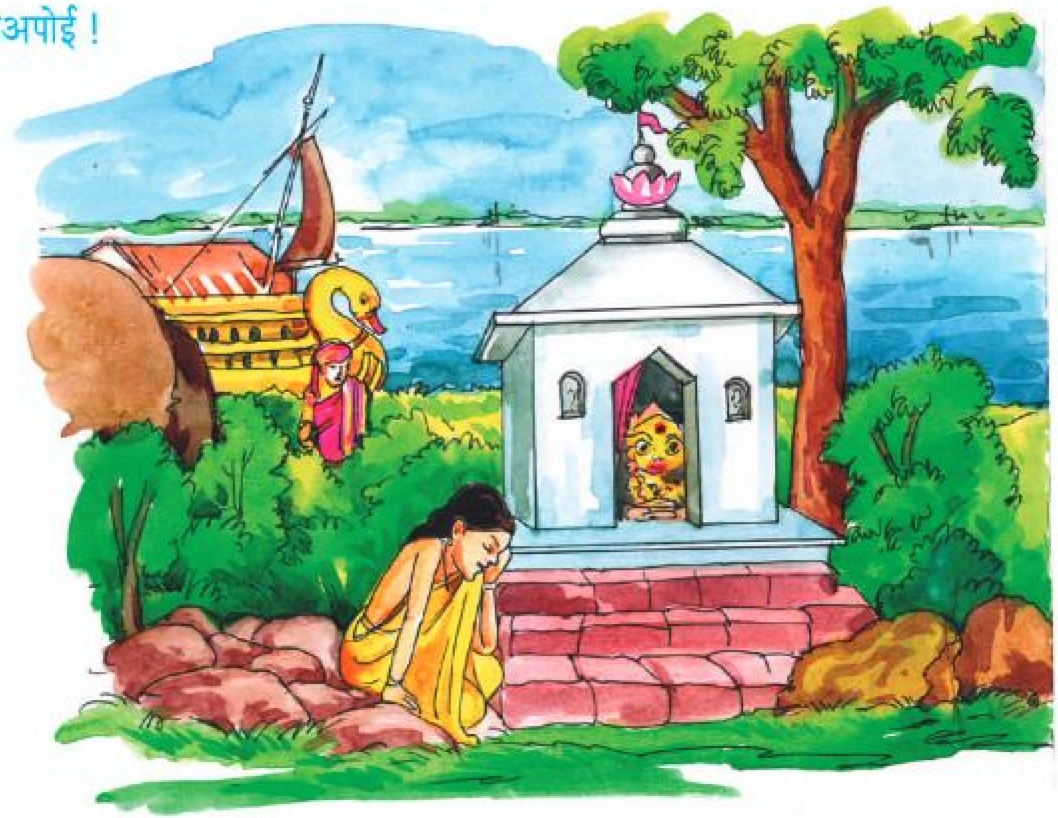

एक बार जब सभी भाई परदेश जाने लगे तो भाभियों से कहा- देखो, हमारी दुलारी बहन तुम्हारे साथ रहेगी । उसे कोई तकलीफ न देना । खुश रखना । लेकिन भाभियों को यह प्यार फूटी आँख नहीं सुहाती थी । भाइयों के विदेश जाने के बाद भाभियों ने ननद की देखभाल ठीक से नहीं की । वे खुद तो ऐशो - आराम से रहती थीं पर तअपोई को बकरी चराने जंगल में भेजती थी । कभी खाने को पूछा तो कभी नहीं । तअपोई भी भूखीप्यासी किसी तरह समय काटती थी । उसे तो सदा अपने भाइयों का ध्यान रहता था । उसने व्रत रखा, मंगला माता की

पूजा की । मिन्नत की- हे माता, मेरे ऊपर दया करो । मेरे भाई लोग जल्दी वापस आ जाएँ । उनका मंगल हो !

वे व्यापारी भाई सही सलामत वापस आए । उस दिन भारी वर्षा हो रही थी । तअपोई के झुण्ड से एक बकरी कहीं बिदक गई । वह उसे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते इतनी थक गई कि नदी किनारे एक पेड़ के नीचे पड़ी रही । उसके भाइयों की नाव पास ही लगी थी । एक भाई ने देखा कि एक मरियल - सी लड़की पेड़ के नीचे लेटी हुई है। वह पास जाकर क्या देखता है कि यह तो उसकी प्यारी बहन है । तअपोई ने सारा हाल सुनाया । भाइयों का गुस्सा चढ़ आया । लेकिन तअपोई ने उनको शांत किया । भाभियों को माफ कर दिया । फिर सब लोग आराम से रहने लगे । इसकी स्मृति में आज ओड़िशा के लोग 'खुदुरुकुणि ओषा' मनाते हैं ।

ओड़िशा के पश्चिम इलाके में आश्विन शुक्ल अष्टमी को बहनें भाइयों के लिए व्रत रखती हैं । देवी की पूजा करती हैं । इन दिनों नव विवाहिता स्त्रियाँ भी अपने मैके आती हैं । भाइयों से मिलती हैं । दूब अक्षत देकर उनकी मंगलकामना करती हैं । भाई भी बहनों को वस्त्र का उपहार देते हैं। सच में इस पर्व में तो स्नेह-प्रेम की धारा बहती है ।

इन शब्दों के अर्थ जानो -

त्योहार - पर्व	मशहूर - प्रसिद्ध
तकलीफ - परेशानी	मिन्नत - विनम्र निवेदन
मरियल - बहुत कमज़ोर	दुबली - पतली, कमजोर

१. पढ़ो और सोचो-

क) मेवाड़ की रानी ने किसे राखी भेजी थी ?

ख) ओड़िशा के व्यापारी बोहित में कहाँ कहाँ व्यापार के लिए जाया करते थे ?

ग) तअपोई के कितने भाई थे ?

घ) तअपोई ने मंगला माता से क्या मिन्नत की ?

२. सोचकर लिखो-

क) भाई और बहन का प्यार निराला क्यों होता है ?

ख) रक्षाबंधन का त्यौहार मशहूर क्यों है ?

ग) तअपोई के साथ भाभिओं ने कैसा व्यवहार किया ?

घ) लौटकर भाइओं ने तअपोई को किस हालत में पाया ?

३. रेखांकित शब्द का विलोम रूप लिखकर वाक्य को पूरा करो-

क) भाभियाँ सुख से रहती थीं पर तअपोई........में थी ।

ख) तअपोई सबसे छोटी बहन थी पर भाई सब ....थे ।

ग) भाइओं को गुस्सा चढ़गया पर तअपोई.......थी ।

घ) वह पेड़ के नीचे लेटी थी पर पेड़ के........कौवे बैठे थे ।

४. धातु : क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं ।

जैसे- पढ़, लिख, आ, जा, आदि ।

सामान्य रूप- मूल धातु की सहायता से क्रिया का सामान्य रूप बनता है । धातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है ।

जैसे- धातु पढ़+ प्रत्यय ना = सामान्य रुप = पढ़ना

आ + ना = आना   हँस +ना = हँसना

जा + ना = जाना   उठ+ना = उठना

नीचे कुछ क्रियाओं के सामान्य रूप दिए गए हैं । बताओ - ये क्रियाएँ किन धातुओं से बनी हैं: लड़ना- ....   करना- ....

चुनना- ....   जागना- ....

मिलना- ....   चलना- ....

५. पाठ से आगे-

राखी के त्यौहार तुम कैसे मनाते हो, कक्षा में दोस्तों को सुनाओ ।

राखी के त्यौहार पर कौन-कौन सी मिठाइयाँ मिलती हैं - पाँच मिठाइओं के नाम लिखो ।

पहेलियाँ

१

नीचे पटको, ऊपर जाती,
ऊपर फेंको, नीचे आती,
उछल-कूद है सदा मचाती,
हमको कितने खेल खिलाती ।

२

धनुष मैं कहलाऊँ
पर तीर न चलाऊँ,
पहने सतरंगी कपड़े,
दूर गगन में इठलाऊँ ।

३

खट्टा-मीठा रस वाला हूँ,
दिखता हूँ मैं गोल ।
पीला-पीला छिलका मेरा,
चीज़ हूँ इक अनमोल ।

४

लाल तवा, सोने से गढ़ा
पूरब से निकला, पश्चिम में ढला ।

उत्तर :
१. गेंद, २. इंन्द्रधनुष
३. संतरा, ४. सूरज

वृक्ष लगाओ

वृक्ष लगाओ, धरा सजा दो,
यमुना तट के इस कोने को,
नंदन वन का रूप बना दो ।

सरदी, गरमी, आँधी, तूफाँ,
वृक्ष खड़ा चुपके सहता है ।
हर पंछी को मिले बसेरा,
नहीं किसी से कुछ कहता है ।

आश्रय देकर जलन मिटाता,
तुम भी ऐसी लगन लगा लो,
नंदन वन का रूप बना दो ।

भूले-भटके राही आकर,
अपनी तपन मिटा जाते हैं ।

राहों की कठिनाई खोकर,
फिर सीधे पथ पर आते हैं ।

घने वृक्ष की छाया बनकर,
तुम भी सब की तपन मिटा दो,
नंदन वन का रूप बना दो ।

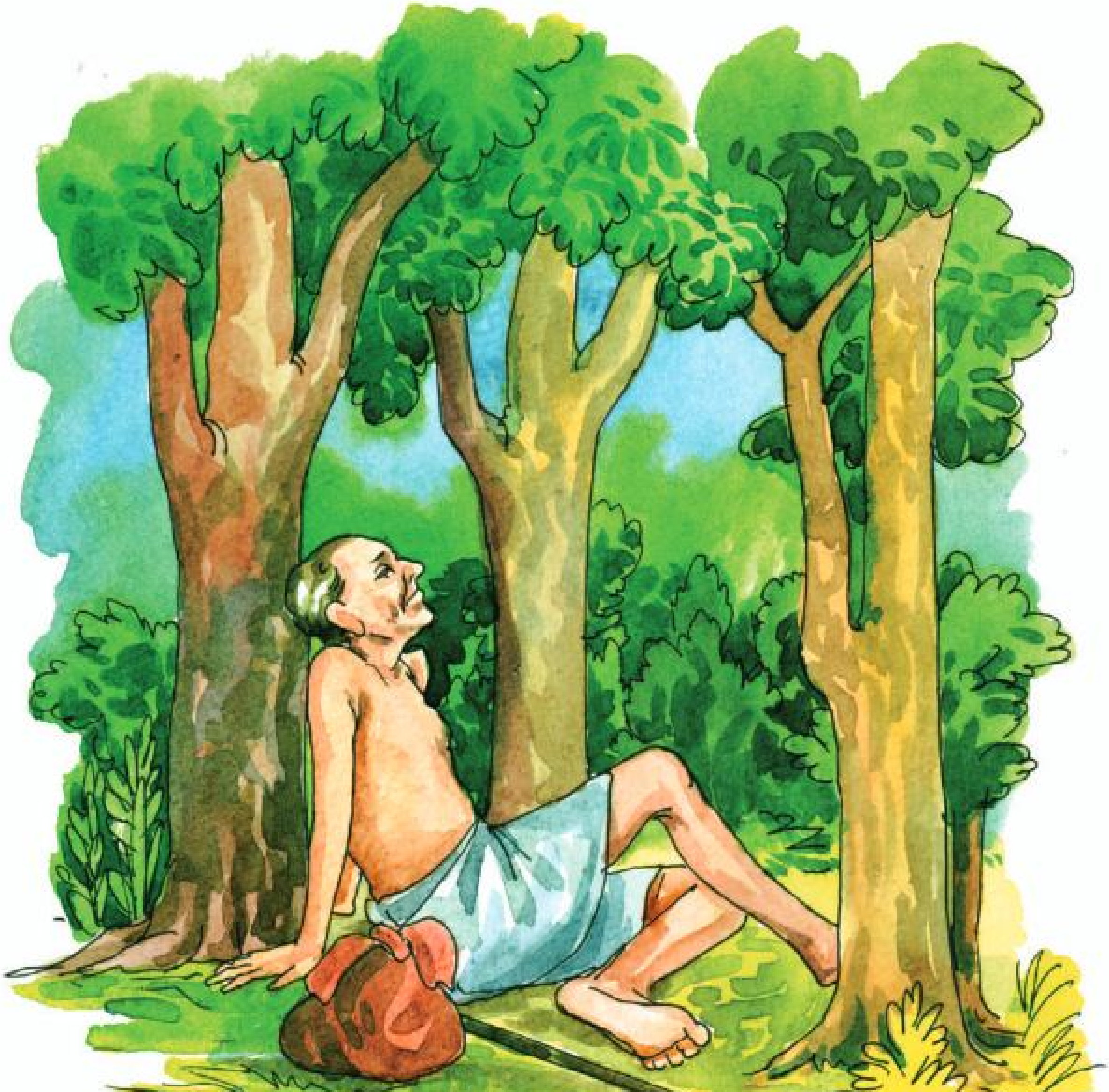

इन शब्दों के अर्थ बताओ-

धरा - पृथ्वी

पंछी - पक्षी

बसेरा - घर

आश्रय - सहारा

तपन - गर्मी

नंदनवन - स्वर्ग का बगीचा

पथ - रास्ता

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) यमुना तट को कवि कैसा रूप देना चाहते हैं ?

ख) वृक्ष क्या कर सकता है ?

ग) वृक्ष किसे आश्रय देता है ?

घ) कवि वृक्ष लगाने को क्यों कहते हैं ?

ङ) वृक्ष हमारी सहायता किस किस प्रकार से करता है ?

२. अर्थ बताओ-

क) आश्रय देकर जलन मिटाता,
तुम भी ऐसी लगन लगा लो,
नंदन वन का रूप बना दो ।

ख) राहों की कठिनाई खोकर,
फिर सीधे पथ पर आते हैं ।

३. निम्न शब्दों की सहायता से खाली स्थान भरो-

सरदी - गरमी, थकान, सुन्दर, सजा दो ।

क) वृक्ष लगाकर धरा .... ।

ख) वृक्ष खड़े खड़े ....तूफान सब सहता है ।

ग) वृक्ष सबको आश्रय देकर सबकी ....मिटाता है ।

घ) तुम यमुना तट को ....रूप दे दो ।

४. किन्तु, परन्तु, पर, बल्कि शब्दों के प्रयोग से वाक्य बनाओ ।

५. कविता से आगे-

चार घने छायादार पेड़ों के नाम लिखो ।

चार फल देनेवाले पेड़ों के नाम लिखो ।

बस की यात्रा

9NI81T

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें । पन्ना से कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन से मिला देती है । सुबह घर पहुँच जाएँगे । हममें से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था; इसीलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना ज़रूरी था । लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते । क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं ? नहीं, बस डाकिन है ।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी । खूब वयोवृद्ध थी । सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी । लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा । यह बस पूजा के योग्य थी । उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

बस-कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे । हमने उनसे पूछा- ''यह बस चलती भी है ?'' वह बोले- ''चलती क्यों नहीं है जी ! अभी चलेगी ।'' हमने कहा- ''वही तो हम देखना चाहते हैं । अपने आप चलती है यह ? हाँ जी, और कैसे चलेगी ?''

गज़ब हो गया । ऐसी बस अपने आप चलती है ।

हम आगा-पीछा करने लगे । डॉक्टर मित्र ने कहा- ''डरो मत, चलो ! बस अनुभवी है। नयी-नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है । हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी ।''

हम बैठ गए । जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं । उनकी आँखें कह रही थीं- 'आना-जाना तो लगा ही रहता है । आया है, सो जाएगा-राजा, रंक, फकीर । आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए ।'

इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया । ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे । जो बचे थे, उनसे हमें बचना था । हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था तो हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है ।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गांधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी । उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी । हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था । पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुज़र रही थी । सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था । कभी लगता सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है । कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है । आठ-दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए । यह समझ में नहीं आता था कि सीट पर हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकायक बस रुक गई । मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है । ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा । अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस का रफतार अब पंद्रह-बीस मील हो गई थी । मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है । प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे । दोनों तरफ़ हरे-भरे पेड़ थे जिन पर पक्षी बैठे थे । मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था । जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी । वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता । झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी ।

एकायक फिर बस रुकी । ड्राइवर ने तरह-तरह की तरकीबें कीं पर वह चली नहीं । सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे- ''बस तो फर्स्ट क्लास है जी ! यह तो इत्तफ़ाक की बात है ।'"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी । लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो । हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं । अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी ।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा । बस आगे चली । उसकी चाल और कम हो गई थी ।

धीरे-धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी । चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी । आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती- ''निकल जाओ, बेटी ! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही ।''

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया । बस बहुत ज़ोर से हिलकर थम गई । अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती । मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा । वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं । उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है । सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है । इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए । अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते । कहते- ''वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए । मर गया, पर टायर नहीं बदला ।''

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली । अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी । पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी । पन्ना क्या, कहीं भी, कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी । लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुजारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है । इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है । हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए । हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह चल दिए । चिंता जाती रही । हँसी-मज़ाक चालू हो गया।

- हरिशंकर परसाई

इन शब्दों के अर्थ जानो-

वापसी - लौटना	रफतार - गति
सफ़र - यात्रा	निमित्त - कारण
इत्तफाक - संयोग से	बियावान - उजाड़, जंगल
अंत्येष्टि - मृतक का कार्य	प्रयाण - प्रस्थान, मरना

१. पढ़ो और सोचो-

क) लेखक को बस में जाने की जल्दी क्यों थी ?

ख) एकाएक बस क्यों रुक गई ?

ग) बस सिर्फ पूजा के योग्य क्यों थी ?

घ) बस की रफतार धीरे-धीरे क्यों कम होने लगी थी ?

२. सोचकर लिखो-

क) लोगों ने लेखक को न जाने की सलाह क्यों दी ?

ख) बस को देखकर लेखक के मन में श्रद्धा क्यों उमड़ पड़ी ?

ग) परसाई जी को ऐसा क्यों लगा कि सारी बस इंजन हैं और वे इंजन के भीतर बैठे हैं।

घ) बस की यात्रा में परसाई जी को कैसे कैसे अनुभव हुए ?

ङ) परसाई ने बस की तुलना सविनय अवज्ञा आंदोलन से क्यों की है ?

३. किसने किससे कहा-

क) यह बस चलती भी है ?

ख) डरो मत, चलो ! बस अनुभवी है ।

ग) बस तो फर्स्टक्लास है जी ! यह तो इत्तफ़ाक की बात है ।

घ) निकल जाओ, बेटी । अपनी तो उम्र ही नहीं रही ।

४. बस, बस, वश- तीनों शब्दों का प्रयोग अलग-अलग अर्थों में होता है ।

एक बस का अर्थ है, 'यान', दूसरे बस का अर्थ है 'काफी' और वश का अर्थ है 'अधीनता' ।

हम इन शब्दों का सहारा लेकर निम्न प्रकार के वाक्य निर्माण कर सकते हैं ।

जैसे- १. मैं रोज बस की सवारी करता हूँ ।

२. खाना बहुत हो गया अब बस भी करो ।

३. ज्यादा चलना मेरे वश में नहीं है ।

उपर्युक्त वाक्यों को देखकर तीनों शब्दों से तुम भी प्रत्येक के दो दो वाक्य बनाओ ।

५. **क)** जो शब्द संबंध स्थापित करते हैं उन्हें कारक कहते हैं ।

जैसे- हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें ।

इसी प्रकार के चार वाक्य पुस्तक से छाँटकर लिखो ।

ख) नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यो में प्रयोग करो । ध्यान रहे कि एक ही शब्द वाक्य में दो बार आए और अर्थ में कुछ बदलाव हो ।

जैसे - बस में चढ़ते हुए श्याम ने कहा अब चलना मेरे बस में नहीं है ।

जल, फल, हार ।

६. पाठ से आगे-

सविनय अवज्ञा आंदोलन किसके नेतृत्व में किसलिए हुआ? इसे इतिहास की किताब में देखो और अधिक जानकारी के लिए अपने शिक्षक से सहायता लो ।

माँ कह एक कहानी

''माँ कह एक कहानी''

''बेटा समझ लिया क्या तूने
मुझ को अपनी नानी ?''

''कहती है मुझसे यह चेटी,
तू मेरी नानी की बेटी ।
कह माँ, कह लेटी ही लेटी
राजा था या रानी ?
माँ कह एक कहानी ।''

''तू है हठी मान धन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सवेरे
तात भ्रमण करते थे तेरे
जहाँ सुरभि मनमानी ।''

''जहाँ सुरभि मनमानी ।
हाँ माँ यही कहानी ।''

''वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिमबिंदु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
लहराता था पानी ।''

''लहराता था पानी
हाँ, हाँ यही कहानी ।''

''गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से
गिरा विद्ध होकर खर शर से,
हुई पक्ष की हानि ।

''हुई पक्ष की हानि ?
करुणा भरी कहानी ।''

''चौंक उन्होंने उसे उठाया
नया जन्म-सा उसने पाया ।
इतने में आखेटक आया
लक्ष्य सिद्धि का मानी ।''

''लक्ष्य सिद्धि का मानी
कोमल कठिन कहानी ।''

''माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किंतु थे रक्षी ।
तब उसने था जो खग भक्षी
हठ करने की ठानी ।''

''हठ करने की ठानी
अब बढ़ चली कहानी ।''

''राहुल तू निर्णय कर इसका
न्याय पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय जय हो जिसका
सुन लूँ तेरी बानी ।''

''माँ मेरी क्या बानी ?
मैं सुन रहा कहानी''

''कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य न उसे उबारे,
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी ।''

''न्याय दया का दानी
तूने सुनी कहानी ।''

- मैथिलीशरण गुप्त

इन शब्दों के अर्थ जानो-

चेटी - दासी,

हठी - जिददी

पक्ष - पंख

आखेटक - शिकारी

हिम बिंदु - ओस की बूंदे

रक्षी - रक्षा करनेवाला

निर्णय - फैसला

बानी - वाणी

उबारे - उद्धार करनेवाला

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) हंस को किसने मारा था ?

ख) हंस की रक्षा किसने की थी ?

ग) खगभक्षी कौन था ?

घ) ऊपर से हंस किस हालत में गिरा ?

ङ) राहुल ने क्या न्याय किया ?

च) रक्षक और भक्षक में क्या अंतर है ?

२. नीचे दिए गए पदों के अर्थ लिखो-

क) वर्ण-वर्ण के फूल खिले थे,
झलमल कर हिमबिंदु झिले थे ।

ख) कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य न उसे उबारे ।

३. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़ो-

क) माँ कह एक कहानी

ख) तात भ्रमण करते थे तेरे

माँ का अर्थ है - माता, जननी आदि ।

तात का अर्थ है - पिता, जनक आदि ।

इन्हें पर्यायवाची शब्द कहा जाता है । अत: पर्यायवाची या समानार्थक शब्द वे हैं जिनका अर्थ समान हो । इसी प्रकार निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो ।

बेटा, उपवन, कूल, खग ।

४. किसने किससे कहा-

क) हुई पक्ष की हानि

करुणा भरी कहानी ।

ख) माँ, कह एक कहानी ।

ग) तू है हठी, मान धन मेरे ।

५. कविता से आगे-

सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा आदि मनुष्य के सद्‌गुण हैं । ऐसे कुछ अन्य सद्‌गुणों के नाम लिखो ।

पर्यटन

कुछ लोग पूछते हैं कि ओड़िशा में क्या है, जिसे देखने जाएँ ? इसका एक ही जवाब हो सकता है कि ओड़िशा में क्या नहीं है, जो देखने लायक न हो ।

आइए, राजधानी से शुरू करें । भुवनेश्वर में ऐसे-ऐसे पुराने मंदिर हैं, ऐसी मूर्तियाँ हैं जिन्हें देखने को रोज हजारों पर्यटक आते हैं । विशाल लिंगराज मंदिर सबकी नजर खींचता है । पास में ही मुक्तेश्वर, पर्शुरामेश्वर, केदारगौरी, ब्रह्मेश्वर, यमेश्वर, राजारानी आदि दर्जनों मंदिर हैं । इनकी सुंदर मूर्तियाँ और कहीं मिलेंगी नहीं । यहाँ कई अति सुंदर मस्जिदें, गीर्जे और गुरद्वारे भी है जहाँ लोग सदा आते जाते रहते है । शहर के पास अशोक और खारवेल के शिलालेख धउली और खण्डगिरि में है । मन बहलाने के लिए

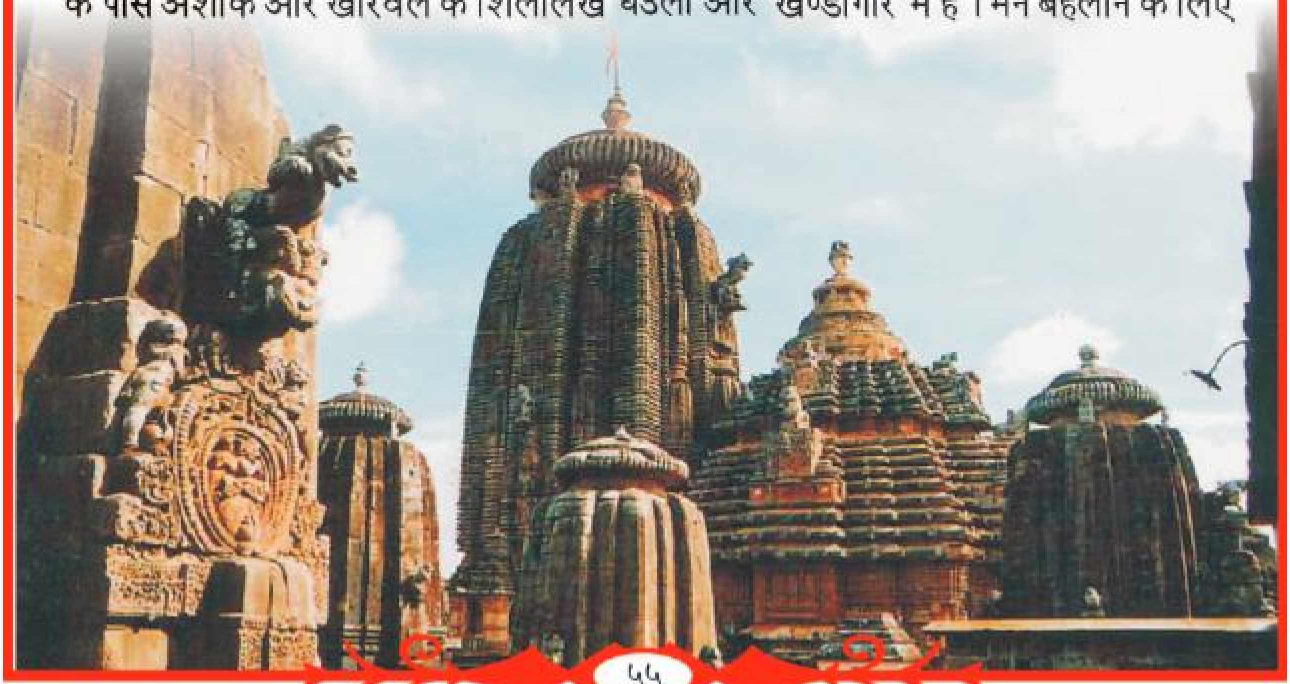

पंद्रह किलोमीटर दूर नन्दनकानन चिड़ियाघर है । यहाँ तरह तरह के शेर, बिरले जानवर और चिड़ियाँ देखने लायक हैं ।

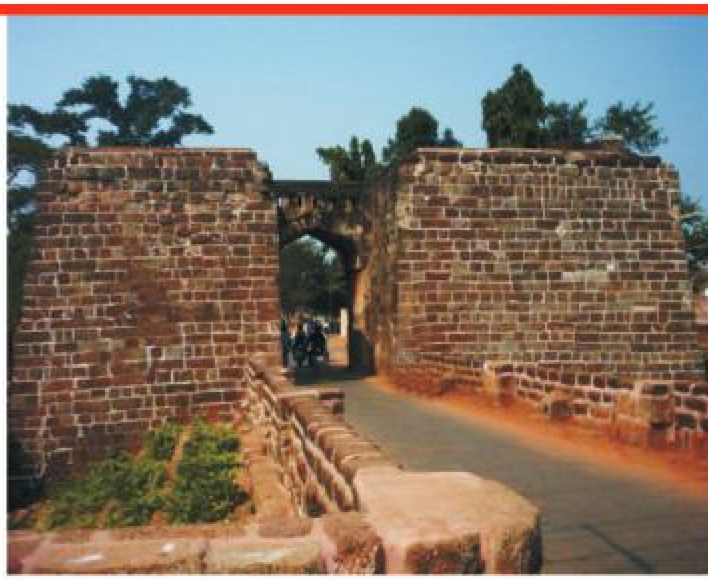

कटक ओड़िशा की पुरानी राजधानी है । हजारों साल पुराना यह शहर है । वहाँ बारबाटी किले के खण्डहर हैं तो नए बारबाटी स्टेडियम में दिनभर खेलकूद की चहल-पहल रहती है। महानदी पर बना जोब्रा बैरेज पानी से लबालब भरा रहता है । पास ही धवलेश्वर का मंदिर महानदी की गोद में बैठा है । वहाँ का हवाई पुल बहुत लचकता है । उसपर चलने में मजा आता है ।

ओड़िशा के पहाड़ी इलाके पहाड़, जंगल और झरनों के कारण बड़े आकर्षक हैं । हरिशंकर और नृसिंहनाथ के पहाड़ी झरने, जलप्रपात सबके मन मोह लेते हैं । गर्मी में ठंडक पहुँचानेवाले यहाँ के होटल और डाक बंगले आतिथ्य के लिए सदा तैयार रहते हैं ।

ओड़िशा का बड़ा इलाका समुद्र के किनारे बसा है । पुरी तो सागर तटों का सिरमौर है । इसमें स्वर्ण बालुका यानी साफसुथरी सुनहरी रेत दुनिया में दुर्लभ हैं । यहाँ हजारों लोग घंटों

बैठकर लहरों में नहाने खेलने और देखने का मजा लूटते हैं। जगन्नाथ का विशाल मंदिर धार्मिक लोगों का मुख्य आकर्षण है।

पुरी से समुद्र के किनारे-किनारे कोणार्क जाया जाता हैं । कोणार्क का सूर्य मंदिर संसार का एक आश्चर्य है। यह भग्न मंदिर अपने वैभव और गरिमा से सबको अभिभूत कर देता है । लोग इसके टूटे हुए रूप को देखकर छल-छलाती आँखों से विदा लेते हैं । वे उत्कल की मूर्ति कला की प्रशंसा में शतमुख हो उठते हैं।

ओड़िशा के घरेलू उद्योग किसी भी पर्यटक के लिए बड़े आकर्षक हैं । पिपिली के चंदवे, बैग, वाल डेकोरेटर, कपड़े के फानूस विश्वभर में फैल गए हैं । संबलपुर इलाके की बनी साड़ियाँ किसके मन नहीं मोहतीं? आजकल इनमें सोना चाँदी की चुमकियाँ लगाते हैं, उनके दाम लाखों रुपयों तक पहुँच गया है ।

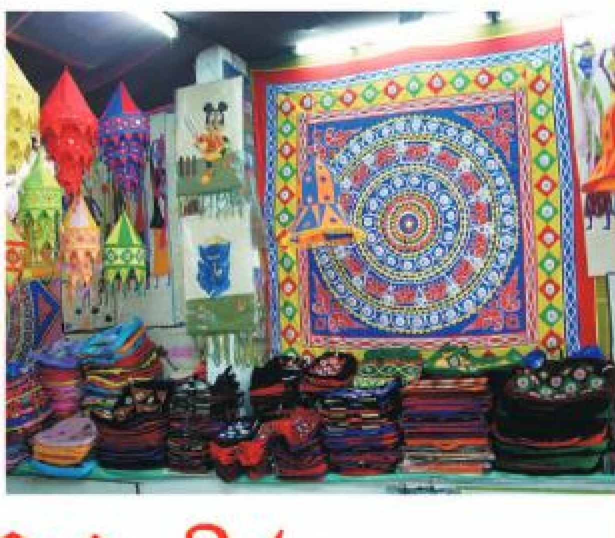

किसी को प्रकृति की गोद में खो जाना है तो वह चिलिका झील में नौविहार कर सकता है, सप्तशैय्या के जंगल में घूम सकता है , केंदुझर में जलप्रपात भी देख सकता है ।

आधुनिक व्यापार केन्द्र के रूप में पारादीप बंदरगाह का बड़ा नाम है । यहाँ से खनिज वस्तुएँ बाहर जाती हैं , लाखों टन माल की ढुलाई होती हैं और बड़े-बड़े जहाज लगे रहते हैं । इनका माजरा ही न्यारा है । राउरकेला का इस्पात संयन्त्र, अनगुल और दामनजोड़ी के अलुमिनियम कारखाने इस प्रांत की प्रगति के प्रमाण हैं ।

दोस्तो, आओ, देखो और खुश होकर जाओ- फिर वापस आने को ।

इन शब्दों के अर्थ जानो-

जलप्रपात - बड़ा झरना

दुर्लभ - जो सहजता से प्राप्त न हो

गरिमा - गौरव

माजरा - घटना

सिरमौर - श्रेष्ठ

अभिभूत - आकर्षित/ भाव विभोर

प्रगति - विकास

ढुलाई - ढोने का कार्य

१. पढ़ो और सोचो-

क) लिंगराज मंदिर कहाँ पर स्थित है ?

ख) नंदनकानन किसलिए प्रसिद्ध है ?

ग) नए बारवाटी स्टोडियम की क्या खासियत है ?

घ) पुरी क्यों प्रसिद्ध है ?

ङ) सूर्यमंदिर कहाँ अवस्थित है ?

च) ओड़िशा के घरेलू उद्योग में कौन कौन सी चीजें पर्यटकों को आकर्षित करती हैं ?

२. सोचकर लिखो-

क) भुवनेश्वर में देखने योग्य कौन कौन सी जगहें हैं ?

ख) कटक की प्रसिद्धि क्यों है ?

ग) ओड़िशा के पहाड़ी इलाके में कैसा आकर्षण है ?

घ) पाराद्वीप बंदरगाह का बड़ा नाम क्यों है ?

३. शब्दों का क्रम ठीक करते हुए सार्थक वाक्य बनाओ-

क) करें/ शुरू/ से/ राजधानी/ आइए ।

ख) महानदी/ बना/ बैरेज / जोब्रा/ पर/ है ।

ग) शहर/ पुराना/ है/ हजारों/ कटक/ साल ।

घ) हरिशंकर/ पहाड़ी/ नृसिंहनाथ/ और/ झरने/ पर/ हैं ।

४. जिससे किसी भाव, स्थिति, गुण, दशा, आदि का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते है ।

जैसे- मित्र-मित्रता, चोर-चोरी

निम्नलिखित शब्दों को भाववाचक संज्ञा में बदलो

मानव, विनम्र, अपना, दुश्मन ।

५. पाठ से आगे-

क्या तुम छुट्टियों में माता-पिता के साथ पर्यटन के लिए जाते हो ! तुम जहाँ जहाँ घूमने गए हो उसका वर्णन अपने मित्रों के सामने करो । उन्हें लिखो ।

खिलौनेवाला

वह देखो माँ आज
खिलौनेवाला फिर से आया है ।
कई तरह के सुंदर-सुंदर
नए खिलौने लाया है ।
हरा-हरा तोता पिंजड़े में
गेंद एक पैसे वाली
छोटी-सी मोटर गाड़ी है
सर-सर-सर चलने वाली ।
सीटी भी है कई तरह की
कई तरह के सुंदर खेल
चाभी भर देने से भक-भक
करती चलने वाली रेल ।
गुड़िया भी है बहुत भली-सी
पहिने कानों में बाली
छोटा-सा 'टी सेट' है
छोटे-छोटे हैं लोटा-थाली ।
छोटे-छोटे धनुष-बाण है
हैं छोटी-छोटी तलवार

9PAV6R

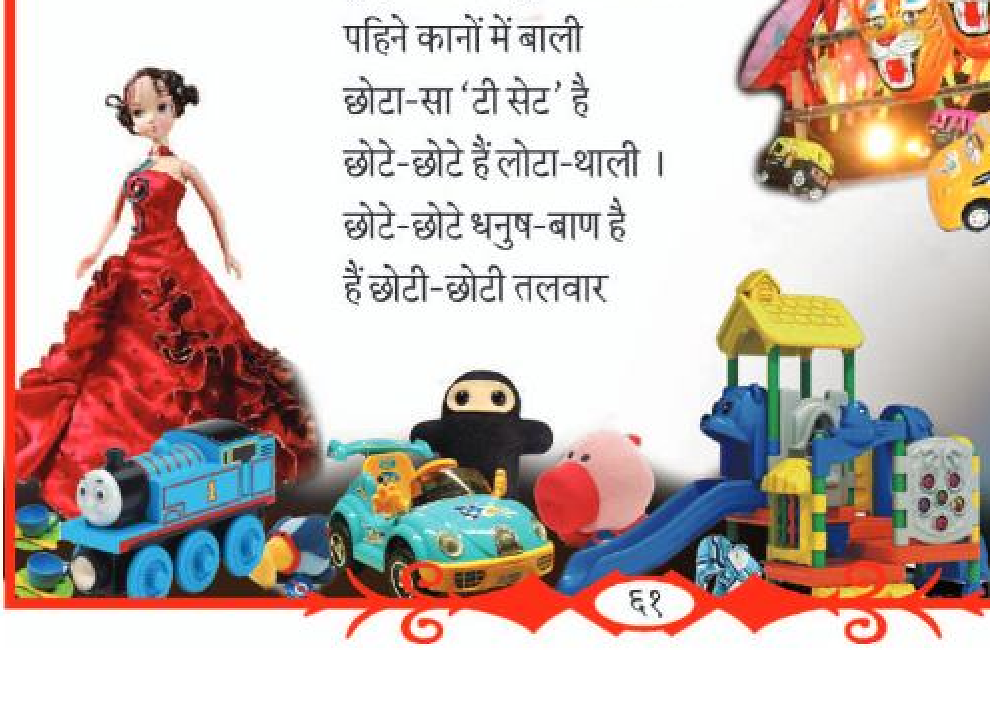

नए खिलौने ले लो भैया
ज़ोर ज़ोर वह रहा पुकार ।
मुन्नू ने गुड़िया ले ली है
मोहन ने मोटर गाड़ी
मचल-मचल सरला कहती है
माँ से लेने को साड़ी ।
कभी खिलौनेवाला भी माँ
क्या साड़ी ले आता है ।
साड़ी तो वह कपड़े वाला
कभी-कभी दे जाता है ।
अम्मा तुमने तो लाकर के
मुझे दे दिए पैसे चार
कौन खिलौना लेता हूँ मैं
तुम भी मन में करो विचार ।
तुम सोचोगी मैं ले लूँगा ।
तोता, बिल्ली, मोटर, रेल
पर माँ, यह मैं कभी न लूँगा
ये तो हैं बच्चों के खेल ।
मैं तलवार खरीदूँगा माँ
या मैं लूँगा तीर-कमान
जंगल में जा, किसी ताड़का
को मारूँगा राम समान ।
तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों-
को मैं मार भगाऊँगा

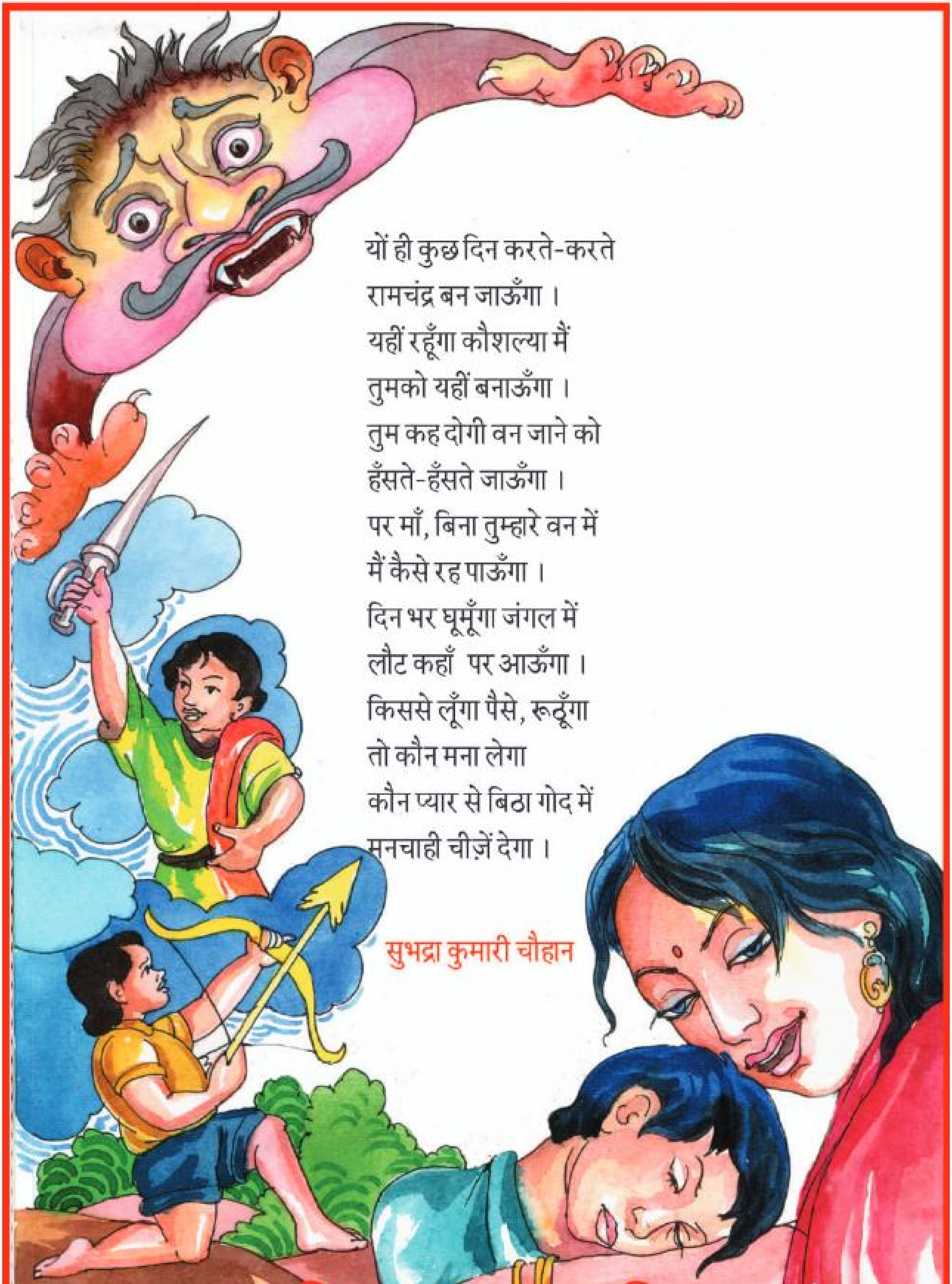

यों ही कुछ दिन करते-करते
रामचंद्र बन जाऊँगा ।
यहीं रहूँगा कौशल्या मैं
तुमको यहीं बनाऊँगा ।
तुम कह दोगी वन जाने को
हँसते-हँसते जाऊँगा ।
पर माँ, बिना तुम्हारे वन में
मैं कैसे रह पाऊँगा ।
दिन भर घूमूँगा जंगल में
लौट कहाँ पर आऊँगा ।
किससे लूँगा पैसे, रूठूँगा
तो कौन मना लेगा
कौन प्यार से बिठा गोद में
मनचाही चीज़ें देगा ।

सुभद्रा कुमारी चौहान

इन शब्दों के अर्थ जानो-

पुकार - आवाज देना

तीर - कमान - तीर और धनुष

तपसी - तपस्या करने वाले

ताड़का - एक राक्षसी

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) खिलौनेवाला कौन कौन से खिलौने लेकर बेचने आया है ?

ख) वह कैसी गाड़ी लाया है ?

ग) खिलौनेवाले की रेल कैसे चलती है ?

घ) गुड़िया कैसे सजी है ?

ङ) मुन्नू और मोहन ने क्या क्या खरीदा ?

च) सरला माँ से क्या खरीदने को कहती है ?

छ) बेटा तलवार क्यों खरीदना चाहता है ?

ज) माँ के बिना उसका बेटा वन में क्यों नहीं रह पाएगा ?

२. अर्थ बताओ-

तपसी यज्ञ करेंगे, असुरों-
को मैं मार भगाऊँगा
यों हीं कुछ दिन करते-करते
रामचंद्र बन जाऊँगा ।

३. चूँ चूँ, कल कल, सर सर, झर झर, फट फट- ऐसे शब्दों को आवृत्ति मूलक पद कहते हैं । इस कविता से ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखो ।

४. जो बीत गया उसे भूतकाल कहते हैं । जो चल रहा है उसे वर्त्तमान काल और जो होने को है उसे भविष्यत् काल कहते हैं ।

जैसे-	राम गया ।	(भूतकाल)
	राम जा रहा है ।	(वर्त्तमानकाल)
	राम जाएगा ।	(भविष्यत् काल)

इसी तरह निम्न वाक्यों को बदलकर लिखो ।

क) खिलौनेवाला आया । (वर्त्तमान काल/ भविष्यत् काल)

ख) मैं असुरों को मार भगाऊँगा । (वर्त्तमान/ भूतकाल)

ग) मैं कैसे रहा । (वर्त्तमान/ भविष्यत् काल)

५. **कविता से आगे-**

तुम बड़े होकर अपना आदर्श किसे बनाओगे और क्यों ? उनके बारेमें दस वाक्य लिखो।

गंगा नदी

भारत में नदी को माता कहते हैं। क्योंकि नदी के कारण मिट्टी उपजाऊ होती है। सिंचाई होती है। बहुत अनाज पैदा होता है। गंगा उत्तर भारत की एक बड़ी नदी है। आर्यों के बड़े-बड़े साम्राज्य गंगा के किनारे स्थापित हुए थे । आज भी भारत के अधिकांश नगर इसी के किनारे बसे हैं ।

कहते है कि ईक्ष्वाकु वंश के राजा भगीरथ अपने साठ हज़ार पूर्वजों का उद्धार करने के लिए ही गंगा को पृथ्वी पर लाए थे । गंगा का उत्पत्तिस्थान गंगोत्री है, जो केदारनाथ से लगभग ४० किलोमीटर आगे और लगभग पाँच हजार मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक 'बर्फ का पहाड़' है । यहाँ पहाड़ों पर जमी बर्फ पिघल-पिघलकर नदी के रूप में नीचे की ओर बहना आरंभ करती है । हिमालय पर्वत से बहने वाली इस नदी को 'भागीरथी' कहते हैं । पर्वतों के बीच कूदती-फाँदती तथा अठखेलियाँ करती भागीरथी बड़े वेग से नीचे उतरती है ।

रुद्रप्रयाग में आकर वह अलकनंदा से मिलकर 'जाह्नवी' कहलाती है और वहाँ से ऋषिकेश पहुँचती है । ऋषिकेश से दस किलोमीटर नीचे हरिद्वार है । हरिद्वार में गंगा समतल मैदान में आती है, फिर आगे बढ़ती हुई प्रयाग पहुँचती है । प्रयाग के पास इसमें यमुना नदी आकर मिलती है । कहा जाता है कि सरस्वती नदी भी अदृश्य रूप में यहीं मिलती है । इस स्थान को 'त्रिवेणी-संगम' कहते हैं । कुछ लोग इसे 'तीर्थराज प्रयाग' भी कहते हैं। प्रत्येक बारह वर्ष पर यहाँ कुंभ का मेला लगता है । कुंभ के अवसर पर यहाँ करोड़ों व्यक्ति संगम में स्नान करते हैं । गंगा का जल बड़ा पवित्र है । इसके रखे हुए जल में कई सालों तक भी कीड़े नहीं पड़ते ! प्रयाग के बाद गंगा बिल्कुल शांत-गंभीर दिखाई देती है ।

कितनी प्राचीन है गंगा ? हमारे देश के सारे इतिहास को इसने अपने सामने बनते देखा है । गंगा दीर्घकाल से बहती आ रही है और बहती रहेगी । इतिहास या भूगोल की किसी घटना से बँधकर यह रुक नहीं जाती । बहना ही इसका जीवन है ।

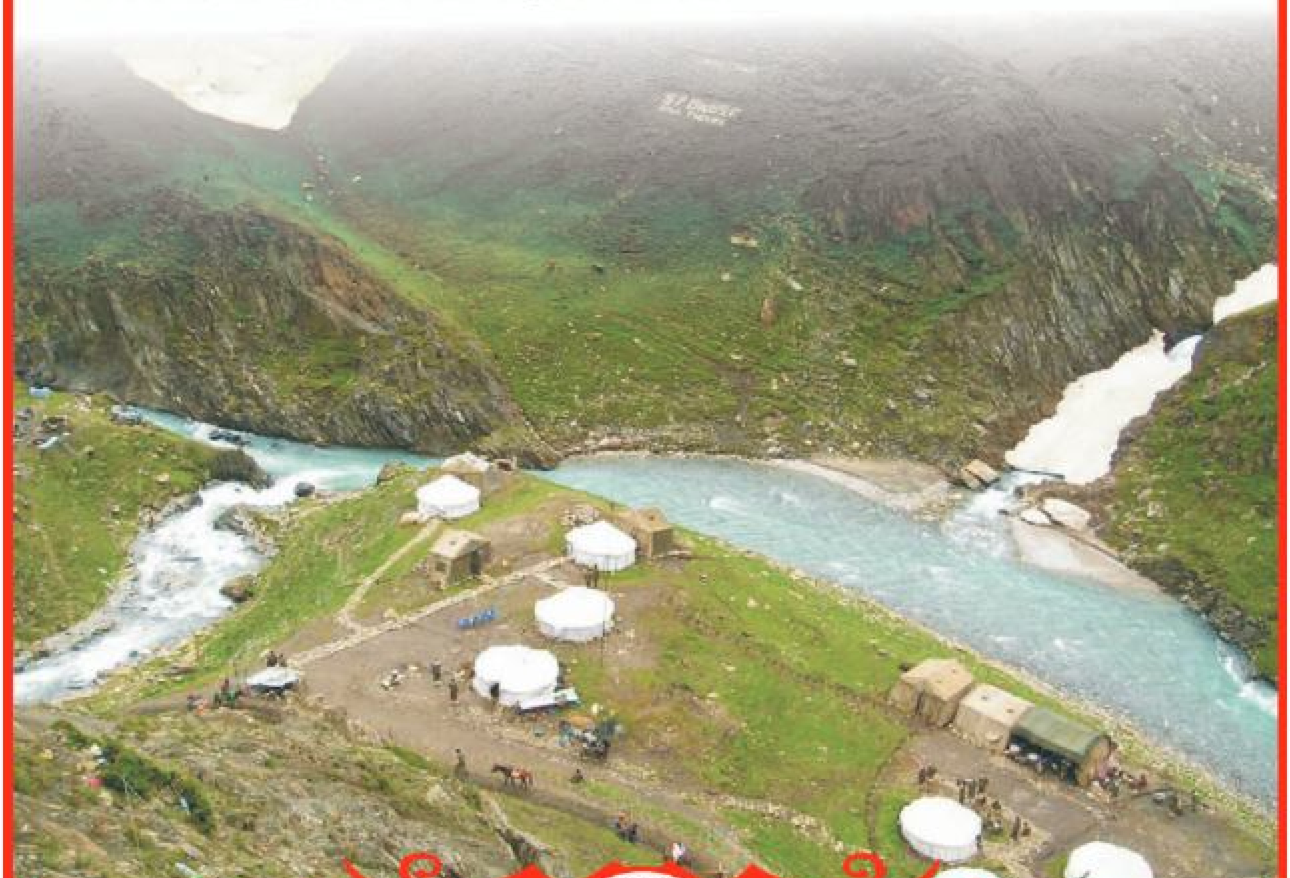

प्रयाग से गंगा बहती हुई वाराणसी पहुँचती है इसके किनारे अनेक पक्के घाट बने हुए हैं । सवेरे-शाम अनेक लोग गंगा में नहाते हैं। नदी जनजीवन का कितना उपकार करती है, यहीं देखा जा सकता है।

वाराणसी से बहती हुई गंगा बिहार पहुँचती है और वहाँ गंडक, कोशी तथा घाघरा की धारा को अपने में समेटती हुई, राजमहल की पहाड़ियों से टकराती हुई बंगाल में प्रवेश करती है । फिर यह ब्रह्मपुत्र से मिलकर अनेक धाराओं में बँटकर बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है ।

गंगा हमें जीवन का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण संदेश देती है और वह है-

रुक जाना ही मर जाना है ।
बढ़ते रहना ही जीवन है ।।

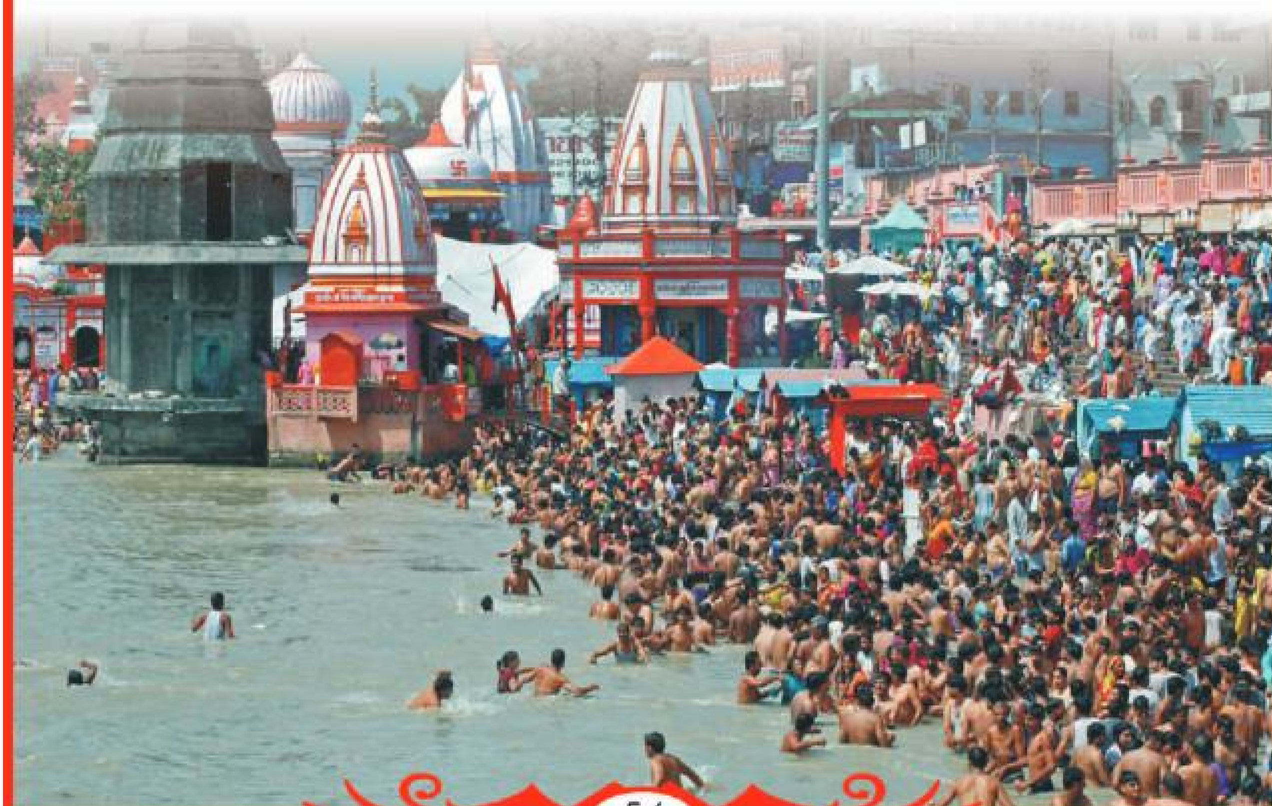

वीर की वसीयत

9PTMA2

कहते हैं कि बड़ा वीर था
अर्जुन का एक पुत्र
सात रथियों से लड़ा था
हाथ नहीं था शस्त्र !
मरते मरते कह गया था
अपने तात औ' मामा से
लेना बदला गिन-गिन मेरी
मौत का इन कायरों से ।
आज का अभिमन्यु चलूँ मैं
लेकर अपना जत्था
कभी अकेला कभी दुकेला
अस्त्र हो कि निहत्था ।
नहीं जानता किस तरफ से
आयेंगी वे गोलियाँ
हो सकता है लैण्डमाईन से
उड़ जायेंगी धज्जियाँ ।

उड़ कर कहाँ जायेगा मेरा
सिर उड़ेंगी बाहें
उड़कर हवा में मिल जायेंगी
मेरे कुटुम्ब की आहें ।
पर न सोचना कि तनिक मैं
कायरों से डरता हूँ
परवाह नहीं इसकी मुझे
जीता हूँ कि मरता हूँ ।
डटा रहूँ मैं आगे उनके
अपनी बंदूक तान
मारते हैं जो इनसान को
कीड़े मकोड़े समान ।
मर भी गया तो चाहता हूँ
फिरसे जनम लूँ
बारबार इन कायरों को
मौत का मजा चखाऊँ!!

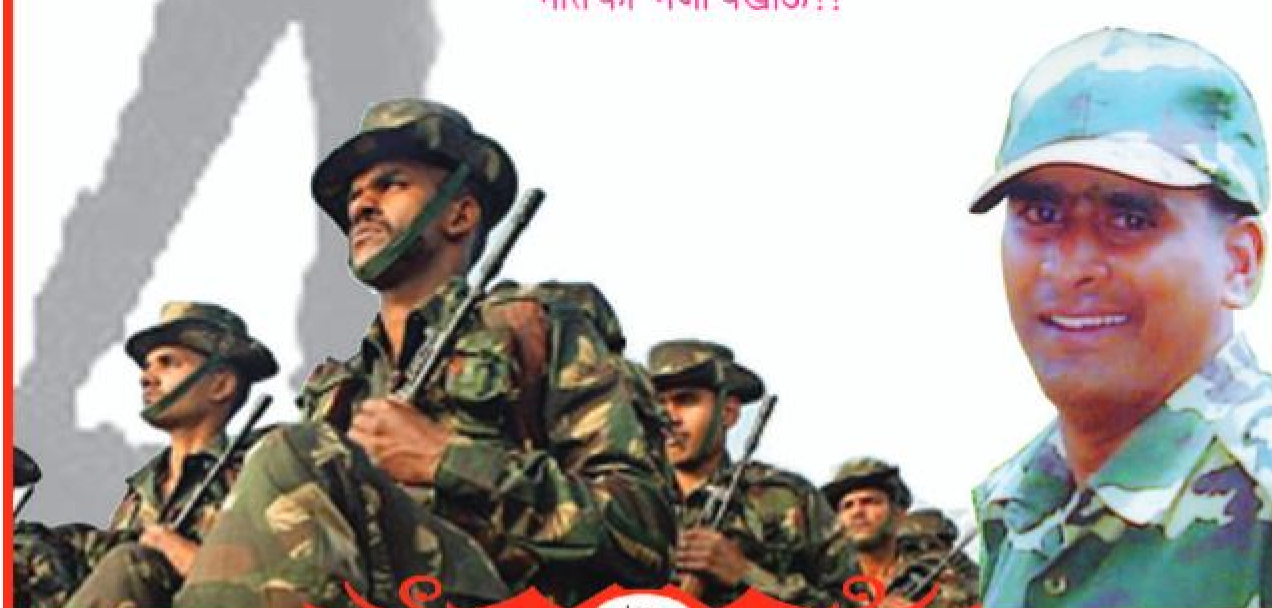

इन शब्दों के अर्थ जानो-

जत्था- छोटा दल

कुटुम्ब - परिवार

निहत्था- बिना शस्त्र के

धज्जियाँ - टुकड़े टुकड़े हो जाना

१. **पढ़ो और सोचो-**

क) अर्जुन का पुत्र कौन था ?

ख) मरते मरते अभिमन्यु क्या कह गया था ?

ग) आज का अभिमन्यु किसे मारना चाहता है ?

घ) आज का अभिमन्यु कौन है और वह क्या चाहता है ?

ङ) वीर क्या वसीयत देना चाहता है ?

च) वीर कायरों से क्यों नहीं डरता है ?

२. **नीचे लिखे पंक्तियों के अर्थ लिखो-**

क) आज का अभिमन्यु .... हो कि निहत्था ।

ख) मर भी गया....... मजा चखाऊँ ।

३. **निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो-**

अभिमन्नु, निहथ्था, असतर, धजियों

४. हम अधिकतर कहते हैं- माता और पिता, राजा और रानी आदि । ऐसे जोड़ों को इस तरह भी लिखा जाता है- माता-पिता, राजा-रानी ।

दिए गए शब्दों में से चुनकर जोड़े बनाओ-और नीचे लिखो-

(बहन, पुरुष, पौधे, आकाश)

क) स्त्री और........... = स्त्री- ....

ख) भाई और .... = भाई- ....

ग) धरती और .... = धरती- ....

घ) पेड़ और .... = पेड़- ....

५. **पाठ से आगे-**

(क) ऐसी कविताओं को दूसरी पुस्तकों से संगृहीत करो जिसमें मातृभूमि के प्रति प्यार दिखाया गया हो।

(ख) कविता की कुछ पंक्तियाँ याद करो।

9Q3IBP

पत्र-लेखन

बच्चो ! पिछली कक्षा में आप पत्रों के कुछ नमूने देख चुके हैं । आइए, इस विषय में हम कुछ नवीन जानकारी प्राप्त करते हैं ।

पत्र कई प्रकार के होते हैं- **साधारण पत्र, प्रार्थना पत्र, व्यापारिक पत्र, शिकायती पत्र, आदेश पत्र, बधाई पत्र, संवेदना पत्र** आदि ।

साधारण पत्र- ये वे पत्र होते हैं, जिनमें हम कोई साधारण समाचार या संदेश लिखकर अपने किसी मित्र या संबंधी के पास भेजते हैं । इसके सात भाग होते हैं-

१. **भेजने का स्थान-** पत्र की दाईं ओर उस स्थान का नाम लिखते हैं, जहाँ से पत्र लिखा जा रहा है ।

२. **दिनांक-** स्थान के नाम के नीचे वह तारीख़ लिखते हैं, जिस दिन पत्र लिखा जा रहा है ।

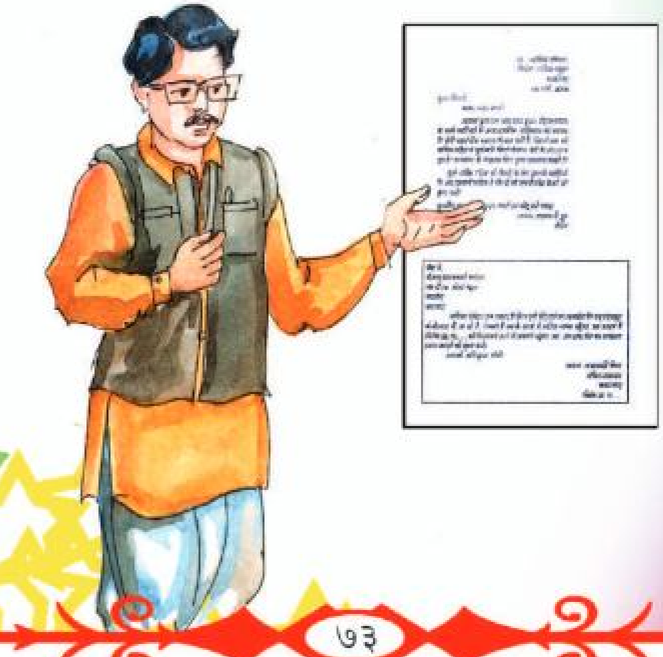

३. अभिवादन- पत्र की बाईं ओर जिसे पत्र लिखा जाता है, उसे संबोधित करके बड़ों और बराबर वालों को प्रणाम, नमस्कार आदि तथा छोटों को आशीर्वाद आदि लिखते हैं ।

४. **समाचार-** अभिवादन के बाद वह समाचार या संदेश कम से कम शब्दों में लिखते हैं, जो हमें भेजना होता है । यही पत्र का मुख्य भाग होता है, जिसके लिए पत्र लिखा जाता है ।

५. **संबंध-** समाचार लिखने के पश्चात् पत्र के नीचे दाईं ओर आदर तथा स्नेहभरे शब्दों में वह संबंध प्रकट करते हैं, जो हमारा पत्र प्राप्त करने वाले के साथ होता है ।

६. **नाम व पता-** संबंधसूचक शब्द के नीचे पत्र भेजने वाला अपना नाम व पता लिखता है ।

७. **पता-** निश्चित स्थान पर उसका पता लिखते हैं जिसके पास पत्र भेजना होता है ।

अभ्यास कार्य

१. अपनी माता जी को पत्र लिखो कि तुम्हारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है । वे उसे देखने अवश्य आएँ ।

२. अपने छोटे भाई को पत्र लिखो । पत्र द्वारा अपने भाई को संदेश दो कि वह परिश्रम से पढ़े। यदि वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ तो तुम उसे उसकी मन पंसद की चीज खरीदकर दोगे।

३. अपने मित्र को गर्मी की छुट्टियों में घर आने को निमत्रंण देते हुए पत्र लिखो ।

जय जवान जय किसान

भारत माँ के दो रक्षक हैं,
दोनों को आराम हराम ।
दोनों अपनी आन के पक्के,
बोलो बच्चो ! उनके नाम ।।
जय जवान, जय किसान ।
जय जवान, जय किसान । जय......
रोली, चंदन माथे लगाकर
माँ-बहनों से आशिष पाई ।
कंधे पर सब शस्त्र सजाकर
दुल्हन ने दी मूक विदाई ।।

भारत माँ की रक्षा करने,
बच्चो ! यह जाता है कौन ?
जय जवान, जय जवान, जय..... ।
युद्ध-क्षेत्र में कूद पड़ा है,
अरिदल पर वह टूट पड़ा है ।
अनगिन लाशें बिछाकर सहसा,
कौन वीर यह स्वयं गिरा है ।।

किसका लहू यह लाल लाल,
कौन यह भारत माँ का लाल ।।
जय जवान, जय जवान, जय..... ।
जेठ की जलती दुपहरी,
या कि हो हिमपात भारी ।
इस धरती का सच्चा प्रहरी,
करता खेतों की रखवाली ।
भारत माँ का बढ़ाता मान,
बोलो बच्चो उसका नाम ।।

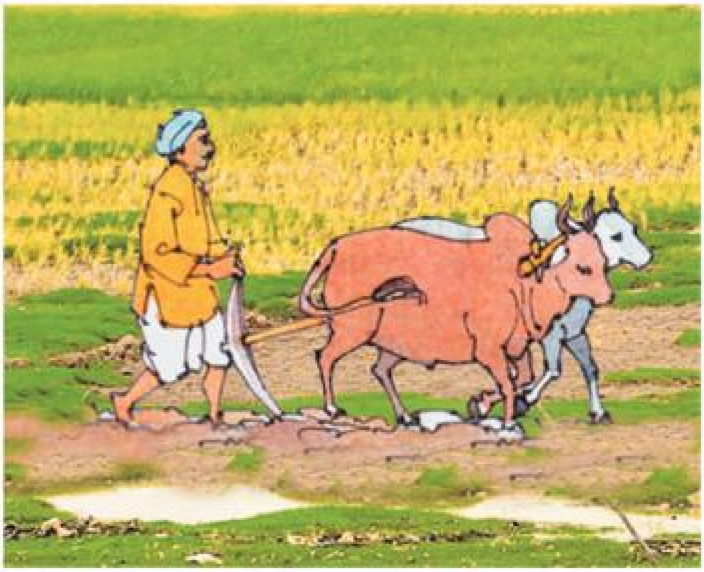

जय किसान, जय किसान, जय...... ।
खुद लोहे के चने चबाए,
हमको सच्चे चने खिलाए ।
खून-पसीना अथक बहाकर,
खेतों में सोना उपजाए ।
नित चलना है जिसका काम,
बोलो बच्चो उसका नाम ।।
जय किसान, जय किसान, जय...... ।
इन वीरों के कारण ही है,
पुलकित धरती का कन-कन ।
प्यारे बच्चो ! शीश झुकाकर
कर लें हम उनका वंदन ।।
जय जवान, जय किसान, जय जवान,
जय किसान, जय....... ।

संकलित

इन शब्दों के अर्थ जानो-

रक्षक - रक्षा करनेवाला

अरिदल - शत्रुओं का समूह

प्रहरी - पहरेदार

आशिष - आशीर्वाद

लहू - खून

पुलकित - प्रसन्न

१. पढ़ो और सोचकर लिखो-

क) भारत माँ के दो रक्षक कौन कौन हैं ?

ख) जवान भारत माँ की रक्षा कैसे करता है ?

ग) किसान को भारत माँ का रक्षक क्यों कहा गया है ?

घ) वीर जवान घर से किस प्रकार विदा लेता है ?

ङ) वीर जवान युद्ध क्षेत्र में किस प्रकार लड़ता है ?

२. अर्थ बताओ-

क) खून - पसीना अथक बहाकर,
खेतों में सोना उपजाए ।

ख) किसका लहू यह लाल-लाल,
कौन यह भारत माँ का लाल ।

३. नीचे लिखे पंक्तियों को पूर्ण करो-

क) युद्ध क्षेत्र में कुद पड़ा है,
.... ।

ख) प्यारे बच्चो शीश झुकाकर,
.... ।

४. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (×) चिह्न लगाओ-

क) इस देश के सच्चे रक्षक वीर जवान और किसान हैं ।

ख) किसान शत्रु पर टूट पड़ता है और अनगिनत लाशें बिछाता है ।

ग) जवान खून पसीना एक कर खेतों में सोना उपजाता है ।

घ) हमें वीर जवानों की वन्दना करनी चाहिए ।

५. वचन बदलो-

माँ, बहन, बच्चा , बेटा ।

६. कविता से आगे-

तुम भी पढ़ लिखकर जवान और किसानों की तरह देश की सेवा कर सकते हो । अभी से उसका अभ्यास करो ।

किसी देश-भक्त जवान की कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाओ ।

सर्वेषां नो जननी

सर्वेषां नो जननी
भारत धरणी कल्पलतेयम्
जननी दत्सल-तनय गणैस्तत्
सम्यक् शर्म विधेयम्
सर्वेषां.......
हिमगिरि-सीमन्तित-मस्तकमिदम्
अम्बुछि-परिगत-पार्श्वम्
अस्मद जन्मदमन्मदमनिशं
श्रोतपुरातनमार्षम्
विजनित हर्षे भारतवर्षम्
विश्वोत्कर्षनिदानम्
भारतशर्मणि कृतमस्माभि:
नवमितमैदयविधानम्-
सर्वेषां....

भारतपङ्कजदलमिदमुत्कल
मण्डलभितिदिदितं यत्
तस्यकृते दयमत्र समेता
विहतित्रोत्कल संसत्
भारतमेका गतिरस्माकं
नापरास्ति भुवि नाम
सर्वादौ परिषत् कर्माणि तत्
भारतमेव नमामः

सारे जहाँ से अच्छा

सारे जहाँ से अच्छा
हिन्दोस्ताँ हमारा - हमारा
हम बुलबुले है इसकी
ये गुलसिताँ हमारा - हमारा
सारे जहाँ से अच्छा ।
पर्वत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का
वो संतरी हमारा वो पासवाँ हमारा-हमारा
सारे जहाँ से अच्छा ।
गोदी मे खेलती हैं जिसकी हजारों नदियाँ
गुलशन है जिसके दम से
रश्के जीना हमारा-हमारा
सारे जहाँ से अच्छा ।
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम बतन हैं हिन्दुस्तां हमारा-हमारा
सारे जहाँ से अच्छा ।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शितलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम्
वन्दे मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुम दल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम्, बरदाम्, मातरम्
वन्दे मातरम्

प्रार्थना

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चले नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना ।
इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना
दूर अज्ञान के हो अंधेरे
तु हमे ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बच के रहे हम
जितनी भी दे भली जिंदगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से
भावना मन में बदले की हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना ।
हम न सोचे हमे क्या मिला है
हम ये सोचे किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बॉटे सभी को
सबका जीवन ही बन जाए मधुवन
अपनी करूणा का जल तू बहा के
कर दे पावन हरेक मन का कोना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो ना

....

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।